(मासिक)

ज्ञानामृत

वर्ष 53, अंक 8, फरवरी, 2018
मूल्य 8.50 रुपये, वार्षिक शुल्क 100 रुपये

सर्व आत्माओं के परमपिता
परमात्मा शिव के
अवतरण यादगार
महाशिवरात्रि पर्व की
आप सबको
बहुत-बहुत बधाई

1

2

3

4

5

6

7

8

1.डेराबस्सी- हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल महामहिम भ्राता आचार्य देवव्रत को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.राजबाला बहन। **2.चारम्पा (भद्रक)-** 'शक्ति भवन' नामपट्टिका का अनावरण करके सेवाकेन्द्र का उद्‌घाटन करते हुए झारखण्ड की राज्यपाल महामहिम बहन द्रौपदी मुर्मू, ब्र.कु.कमलेश बहन तथा अन्य। **3. बलिया-** जननायक चन्द्रशेखर विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ.योगेन्द्र सिंह जी को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.उमा बहन। **4. अम्बाला कैन्ट-** ब्रह्माकुमारी संस्था के 80वें स्थापना वर्ष महोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए स्वास्थ्य, खेल एवं युवा कार्यक्रम मंत्री भ्राता अनिल विज, ब्र.कु.भ्राता अमीरचंद, ब्र.कु.मीरा बहन, ब्र.कु.कृष्णा बहन तथा अन्य। **5.रीवा-** म.प्र.के मुख्यमंत्री भ्राता शिवराज सिंह को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.निर्मला बहन। **6.नई दिल्ली (हरिनगर)-** केन्द्रीय मानव संसाधन मंत्री भ्राता प्रकाश जावड़ेकर को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.शुक्ला बहन। **7.भिलाई नगर-** 'मन की शान्ति – जीवन की शक्ति' कार्यक्रम का उद्‌घाटन करते हुए फैरोस्कैप निगम के एम.डी.भ्राता राजीव भट्टाचार्य, पूर्व विधायक बद्रूद्दीन कुरैशी, ब्र.कु.गीता बहन, छत्तीसगढ़ के उच्च तकनीकी शिक्षामंत्री भ्राता प्रेमप्रकाश पाण्डे, ब्र.कु.उषा बहन, आधुनिक मेटल्स के सी.ई.ओ.भ्राता निलोत्पल राय तथा ब्र.कु.आशा बहन। **8.विराटनगर (नेपाल)-** स्वर्ण जयन्ती महोत्सव का उद्‌घाटन करते हुए संघीय मामले तथा स्थानीय विकास मंत्री भ्राता विजय कुमार गच्छदार, ब्र.कु.राज बहन, ब्र.कु.किरण बहन तथा ब्र.कु.उषा बहन।

संजय की कलम से

गरीबी का उन्मूलन करने वाला पर्व
शिवरात्रि

शिवरात्रि का पावन पर्व अथवा सर्व-महान उत्सव पुन: आ गया है। यह त्योहार आज की हमारी सर्वाधिक गम्भीर समस्या का हल भी हमें सुझाता है। कोई प्रश्न पूछ सकता है कि त्योहार का समस्या के साथ क्या सम्बन्ध है?

कहावत भी है कि परिस्थितियाँ ही महापुरुष को जन्म देती हैं। इस कहावत से हमें यह संकेत मिलता है कि जब परिस्थितियाँ पुरुषों तथा महापुरुषों के बस से बाहर हो गयी होंगी तभी तो वे परमपुरुष (परमात्मा) शिव के अवतरण को लाई होंगी। फिर, 'रात्रि' शब्द का तो प्रयोग ही विकट परिस्थितियों के लिये होता है। घटाटोप काली रात्रि भयावह होती है। अन्धेरे में मनुष्य को कुछ सूझता नहीं, मंजिल पर पहुँचने का मार्ग ही दिखाई नहीं देता। अत: त्योहार के नाम पर 'रात्रि' शब्द के प्रयोग से ही सिद्ध है कि परमात्मा का अवतरण तब हुआ होगा जब समूचा मनुष्य-समाज ऐसी उलझनों में फँसा होगा कि उन समस्याओं का समाधान नहीं मिलता होगा। 'रात्रि' शब्द को रूपक के तौर पर प्रयोग हुआ मानने से तथा इसका व्यापक अर्थ लेने से यह निष्कर्ष लेना ठीक ही है कि शिव के अवतरण-काल में अवश्य ही परिस्थितियाँ ऐसी गम्भीर रही होंगी कि मानव-समाज द्वारा समाधान से बाहर होंगी तभी तो भगवान को स्वयं 'आकाश सिंहासन' छोड़ना पड़ा; नहीं, नहीं, ब्रह्मलोक से आकर मानव-तन में दिव्य प्रवेश करना पड़ा।

सर्वाधिक विकट समस्या

आइये, पहले हम यह देख लें कि आज हमारे सामने सबसे अधिक दुरूह समस्या कौन-सी है? देश में समस्याएँ तो कई हैं परन्तु इस समय सबसे बड़ी समस्या गरीबी की है। जिस देश में श्री नारायण का राज्य था, आज वहाँ सभी दरिद्र नारायण बन गये हैं। करोड़ों मनुष्यों के पास रहने के लिये मकान नहीं हैं, न ही रोटी के लिए पूरे पैसे हैं। करोड़ों ऐसे भी हैं जो अपनी शिक्षा और स्वास्थ्य का समुचित प्रबन्ध नहीं कर पा रहे हैं।

विडम्बना

हमने इस लेख के प्रारम्भ में कहा था कि शिवरात्रि का पुनीत त्योहार हमारी इस समस्या का हल सुझाता है परन्तु हमारे सामने जो वस्तु-स्थिति है वह तो कुछ और ही है। निस्संदेह शिव को 'अवढ़रदानी' अथवा 'भोला भण्डारी' कहते हैं परन्तु उस अवढ़रदानी की यहाँ हर गली-मुहल्ले में पूजा होने पर भी

अमृत-सूची

- हाथ नहीं, मन जोड़ें (संपादकीय)...5
- बच्चू बादशाह *(कविता)* 7
- पत्र संपादक के नाम 8
- प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के 9
- कोई भी वस्तु खुशी नहीं देती....11
- खत्म हुआ अकेलेपन का 12
- मिठास के आवरण में जहर 13
- आदिवासी कौन? 16
- प्रभु ने किये सब अरमान पूरे.....18
- सोने का देश बना दें *(कविता)* ...19
- त्याग व सेवा की मूरत माता.....20
- एक अनोखा मूर्तिकार...........23
- लहसुन-प्याज पर निषेध.........25
- संग्रह तो किया पर 26
- विज्ञान और अध्यात्म...........27
- मोबाइल बनाम मनोबल 28
- 'विजयी भव' के वरदान........29
- सतोप्रधान तकनीकी............30
- छूट गए बुरे कर्म 31
- सचित्र सेवा समाचार............32
- दुखों की फीलिंग समाप्त........34

फार्म – 4

नियम 8 के अंतर्गत अपेक्षित पत्रिका का विवरण

1. प्रकाशन : ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड (राजस्थान)-307510

2. प्रकाशनावधि : मासिक

3. मुद्रक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

4. प्रकाशक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

5. सम्पादक का नाम : ब्र.कु. आत्म प्रकाश
क्या भारत का नागरिक है? हाँ
पता – उपरोक्त

सम्पूर्ण स्वामित्व : प्रजापिता ब्र.कु.ई.वि.विद्यालय

मैं, ब्र.कु. आत्म प्रकाश, एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सही हैं।

(ब्र.कु. आत्म प्रकाश)
सम्पादक

भारत में गरीबी है। क्या 'शिव' अब 'भोले' नहीं रहे, निष्ठुर हो गये हैं या उन्होंने दान देना बन्द कर दिया है या बात कुछ और है? शिव के बारे में तो उक्ति है ''शिव के भण्डारे भरपूर, काल-कण्टक सब दूर", तब भारत के भण्डारे क्यों नहीं भरते? परमात्मा को तो 'गरीब नवाज' कहा जाता है, तब भारत देश, जहाँ के अधिकतर लोग ईश्वर-प्रेमी अथवा प्रभु-विश्वासी हैं, वहाँ गरीबी क्यों है? क्या आजकल परमात्मा की उपाधियाँ ही बदल गयी हैं; क्या आज शिव 'अमीर नवाज' बन गये हैं? 'शिव' का अर्थ है 'कल्याणकारी', परन्तु इस देश का अकल्याण क्यों हुआ-हुआ है, यह कैसी विडम्बना है।

कारण क्या है?

गहराई में जाने पर आप देखेंगे कि 'शिव' केवल 'दाता' नहीं हैं बल्कि 'वरदाता' हैं और आज भारत के लोग उस वर से वंचित हैं। दान तो मनुष्य भी देते हैं परन्तु भगवान 'वरदान' देते हैं। वर का अर्थ है – श्रेष्ठ। कोई भी मनुष्य श्रेष्ठ दान अथवा श्रेष्ठता (दिव्यता) का दान नहीं दे सकता; इसलिए 'वरदाता' एक परमात्मा ही को माना जाता है। मनुष्य धन दान कर देते हैं परन्तु हो सकता है कि वह धन चोरी हो जाये, गुम हो जाये या लेने वाला उसका दुरुपयोग करे। वैसे भी धन होने से स्वास्थ्य, मानसिक सुख, सम्बन्धियों से सुख – ये सभी प्राप्त हों, यह जरूरी नहीं है। इसलिये उस धन को 'वरदान' नहीं कहा जा सकता।

सद्‌गुणों का दान

वरदान क्या है? सबसे श्रेष्ठ दान है सद्‌बुद्धि का अथवा दिव्य गुणों का दान जिससे लेने वाले का जीवन श्रेष्ठ बन जाये। जिस मनुष्य की अक्ल मारी जाये या 'बुद्धि' भ्रष्ट हो जाये या जिसकी बुद्धि अवगुण चिन्तन तथा विषयों में लग जाये, वह तो मनुष्यता से भी पतित हो जाता है। यों खाने-पीने को तो विलायत में पालतू बिल्ली अथवा कुत्ते को भी अच्छा मिलता है परन्तु उनमें सद्‌बुद्धि अथवा विचारों में उत्तमता तो नहीं होती। उनमें मनुष्यत्व से देवत्व के दर्जे तक उठने की बुद्धि तो नहीं होती। शिव परमात्मा तो ऐसा श्रेष्ठ दान देते हैं कि मनुष्य में सद्‌गुण आ जायें, अवगुण न रहें, स्वयं को तथा दूसरों को दुख देने वाले संस्कार या विकार उसमें न रहें बल्कि उसके जीवन में श्रेष्ठता, ईश्वरीय आनन्द, आत्मिक सुख और फिर सुखदायक सम्पत्ति भी बनी रहे।

दिव्य बुद्धि ही सर्वश्रेष्ठ कैसे है?

हम देखते हैं कि जब किसी मनुष्य का विवेक नष्ट हो जाता है, सोचने-समझने की शक्ति नहीं रहती तो लोग प्राय: कहते हैं कि इसकी बुद्धि का दिवाला निकल गया है। इसी प्रकार, जब किसी के चरित्र का पतन हो जाता है तो उसके बारे में भी कहा जाता है कि इसके चरित्र का दिवाला निकल गया है। अत: केवल धन का ही दिवाला नहीं होता बल्कि दिवाला बुद्धि और चरित्र का भी होता है। वास्तव में बुद्धि एवं चरित्र का दिवाला होने से ही या तो धन का भी दिवाला निकल जाता है या धन होते हुए भी मनुष्य के जीवन में सुख-चैन का दिवाला निकल जाता है। चरित्र की श्रेष्ठता भी बुद्धि की दिव्यता पर निर्भर करती है। यदि मनुष्य की बुद्धि सात्विक हो तो चरित्र तो सात्विक होगा ही। बुद्धि को सात्विक एवं दिव्य बनाने वाले साधन केवल ईश्वरीय ज्ञान तथा सहज राजयोग हैं। ये वर (श्रेष्ठ) दान परमात्मा शिव देते हैं परन्तु आज ये दोनों वरदान मनुष्य लेते ही नहीं तो वे नर से नारायण या मनुष्य से देवता बन नहीं पाते; इसलिए वे दरिद्र बने हुए हैं।

शेष पृष्ठ 24 पर

हाथ नहीं, मन जोड़ें

हम सभी की अधिकतर यह शिकायत रहती है कि हम सोचना तो अच्छा चाहते हैं पर पता नहीं बुरे विचार, हीन विचार क्यों आ जाते हैं, ना चाहते भी भीतर क्यों प्रवेश हो जाते हैं? आत्मा मालिक की तीन शक्तियों में से एक शक्ति है मन अत: इसे मालिक के वश में तो रहना ही चाहिए। जैसे हम अपनी स्थूल इन्द्रियों को वश में कर सकते हैं, आँखों को मर्जी से खोल-बन्द कर सकते हैं, हाथों को स्वेच्छा से स्थिर या कार्य में नियोजित कर सकते हैं, ऐसे ही मन भी आत्मा की एक सूक्ष्म इन्द्रिय है, इसे भी अपनी जरूरत अनुसार कहीं लगा या हटा सकते हैं, इसके विचारों की दिशा को बदल सकते हैं, गति को धीमा कर सकते हैं। यही जीवन जीने की कला है। यदि यह कला नहीं सीखी तो बाकी का सीखा हुआ सबकुछ मिलकर भी जीवन को आनन्दमय नहीं बना सकेगा। जिस आत्मा का अपना मन कहना न माने, दुनिया में उसका कहना कोई नहीं मानेगा। जिस दिन मन मुट्ठी में हो जाएगा, दुनिया मुट्ठी में आ जाएगी।

आकार दें अपने विचारों को

हमारे विचार के बल से हमारा शरीर चल रहा है। सुबह से शाम तक शरीर के अन्दर भी और शरीर के बाहर भी सैकड़ों क्रियाएँ चलती हैं। मन ने विचार दिया, उठो और शरीर ने अनुकरण किया। मन ने विचार दिया, सोओ, शरीर ने उसका भी अनुकरण किया। सारा जीवन ही विचारों से निर्मित है। कइयों को विचार आता है कि अमुक ने मुझे आगे बढ़ने में, जीवन में कुछ कर दिखाने में सहयोग नहीं दिया परन्तु इस दुनिया में ऐसे उदाहरण भरे पड़े हैं कि जिनको बाहरी जगत में सब कुछ सुलभ था परन्तु अन्तर्जगत अर्थात् मन के विचार कमजोर होने के कारण सुलभ को भी दुर्लभ बना बैठे। अत: हमने जीवन में जो पाया वो सशक्त विचारों के बल से और जो खोया वो अशक्त विचारों के कारण। कोई व्यक्ति हमें न कुछ दे सकता है और न ही हमसे कुछ छीन सकता है। हम अपने भाग्य के निर्माता स्वयं हैं। जब विचार ही हमारे भाग्य निर्माता हैं तो वे कैसे होने चाहिएँ? यह हमें ही निर्धारित करना है। हम जीवन की बाकी चीजों को आकार देने के बजाए क्यों न सबसे पहले अपने विचारों को आकार दें। इस सूक्ष्म कार्य को सम्पन्न करने वाला विषय है आध्यात्मिक ज्ञान।

विनिमय भगवान के साथ

मान लीजिए, हमारे घर में साँप या बिच्छू घुस आए तो क्या हम हाथ पर हाथ रखे बैठे रहेंगे, कदापि नहीं। या तो घर से हम निकलेंगे या उन्हें निकालेंगे, उनके साथ नहीं रहेंगे परन्तु जो व्यर्थ और विकारी विचार हैं वे तो इनसे भी ज्यादा जहरीले हैं, फिर हम उनके साथ कैसे जी रहे हैं, क्या हम उनसे भयभीत नहीं होते? उन्हें निकालने के लिए इतने तत्पर क्यों नहीं होते? हमारा बहाना होता है कि व्यर्थ, विकारी, पुराने, बासी विचार अपने आप आते हैं, हमारे ना चाहते भी आ जाते हैं। ये जहरीले प्राणी भी तो बिना बुलाए आए थे, फिर भी पुरुषार्थ करके इन्हें निकाला ना। इसी प्रकार, जहरीले विचारों को भी भगाने का पुरुषार्थ कीजिए। इसके लिए आध्यात्मिक ज्ञान का खजाना अपने अन्दर भरिए। जैसे स्वच्छ जल के नल के नीचे रखते ही बाल्टी का पुराना गन्दा जल अपने आप निकल जाता है,

उसी प्रकार ईश्वरीय ज्ञान धारण करने से व्यर्थ, विकारी विचार स्वत: समाप्त हो जाते हैं।

ज्ञान-धन के अभाव में ईर्ष्या, घृणा, क्रोध, परचिंतन, मोह, लोभ, अहंकार को ही हमने अपना धन-दौलत बना लिया है, जैसे कि छोटा नादान बच्चा पोटली में कंकर-पत्थर इकट्ठे कर लेता है। उसकी माँ कहती है, बेटा, फेंक दे, तो रोता है। फिर माँ कहती है, इनके बदले मैं तुझे सुंदर खिलौना दूँगी तो कई बार मान जाता है, कई बार नहीं भी मानता। इसी प्रकार भगवान भी हमें कहते हैं, बेटा, इस ईर्ष्या, द्वेष.....की पोटली के बदले में मैं तुमको सुख की नींद दूँगा, निरोगी काया और लम्बी आयु दूँगा, सुख-शान्ति-समृद्धि से भरपूर कर दूँगा, मानव से देव बना दूँगा, ये मुझे समर्पित कर दे। तो हमें केवल विनिमय (Exchange) करना है। बुरा देकर अच्छा पाना है। कख के बदले लख मिल रहा हो तो सोच-विचार किस बात का।

कण जितना मन, मण जितना क्यों?

एक शरीर में अंग तो अनेक होते हैं पर मन तो एक ही है। इन अंगों में से किसी अंग में कभी कोई बीमारी लग जाती होगी परन्तु मन का रोगी तो आज बच्चा-बच्चा हो गया है। तनाव मन में, अवसाद मन में, चिन्ता मन में, दुख मन में, कड़वाहट मन में, घृणा, ईर्ष्या, क्रोध मन में........इतनी चीजें भरी हैं मन में, तो कण जितना मन, मण जितना होगा कि नहीं? हम शरीर के सभी अंगों को जानते हैं, सँवारते हैं, शृंगारते हैं परन्तु दर्द भरे मन की न खबर, न जानकारी। बिना जानकारी वाली चीज (मन) को सँवारें कैसे? संभालें कैसे? डॉक्टर के पास जाते हैं तो वो भी मन के बजाए शरीर की जाँच करके दिलासा दे देता है कि आप बिल्कुल ठीक हैं, शरीर के सभी अवयव स्वस्थ हैं, उसने भी मन को नहीं मापा। मन को मापने का कोई यन्त्र उसके पास है ही नहीं। बीमार सॉफ्टवेयर है और वह परिणाम हार्डवेयर के दिखा रहा है, दर्द से मुक्ति मिले कैसे?

मन को करना है मनमनाभव

फिर इस दर्द को लेकर मन्दिर में जाते हैं और हाथ जोड़कर कहते हैं, भगवान, मन बड़ा अशान्त है, नींद नहीं आती, शान्ति दो। भगवान के सामने हाथ जुड़े हुए हैं पर दर्द तो मन में है, मन है कहाँ? उसे भगवान के आगे किया क्या? नहीं। हाथ, शरीर, आँखें सब भगवान के सामने हैं, सिर्फ मन गायब है। भगवान पूछते हैं, दर्द वाली चीज को सामने लाओ पर वह तो मन्दिर में आया ही नहीं। विचार कीजिए, बिजली (लाइट) कैसे आती है? जब पावर हाउस वाले तार के साथ हम अपने बल्ब का तार जोड़ते हैं तब बिना बोले बिजली आ जाती है। हम तारों को जोड़ें नहीं और हाथों को जोड़कर खड़े रहें कि लाइट हाउस बिजली दो, बिजली दो, आ जाएगी क्या? नहीं ना। इसी प्रकार हम जीवन भर हाथ जोड़ते रहे पर मन जोड़ा क्या? भगवान के साथ मन जोड़ा नहीं, शान्ति के सागर से कनेक्शन जुटा नहीं तो शान्ति मिले कैसे? स्थाई शान्ति न घर में मिली, न मन्दिर में, न डॉक्टर के पास क्योंकि बीज में पानी डाले बिना पत्तों को ही सींचते रहे। बीज है मन, उसे शान्ति से सींचना है, उसे मनमनाभव करना है, यही गीता के भगवान का आदेश है।

दिशा के अभाव में भटक जाते हैं पैर

एक बार एक बालक का, जो अनाथ था, किसी सड़क दुर्घटना में एक पैर कट गया। कुछ दयालु समाजसेवियों ने उसको कृत्रिम पैर लगवा दिया, यह सोचकर कि बालक पढ़-लिखकर आत्मनिर्भर बन जाए। परन्तु 10 साल बाद जब उन्हें पता चला कि वह बालक, जो अब नौजवान हो चुका है, जेल की सजा भुगत रहा है, तो उन्हें बड़ा दुख हुआ कि हमने तो बहुत खर्चा करके उसे पैर लगवाया था, यह कैसे हो गया? किसी ज्ञानवान ने उन्हें समझाया कि आपने तो केवल पैर दिया था परन्तु पैर से जाना किस दिशा में है, वो दिशा तो नहीं दिखाई थी ना। आज भारत की जेलों

में 10 लाख कैदी हैं। उन सबको पैर हैं। क्या पैर होना पर्याप्त है? क्या उन पैरों को दिशा नहीं चाहिए? दिशा के अभाव में पैर होते भी हम भटक जाते हैं। विज्ञान पैर दे देता है पर दिशा देने के लिए आध्यात्मिक ज्ञान चाहिए।

आसुरी और देवताई स्वभाव

जैसे स्वच्छता के अभाव में कीड़े, कीटाणु आदि पैदा होते हैं, उसी प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव में मन में आसुरी अवगुण पैदा हो जाते हैं। जब मन परेशान होता है तो उसे बहलाने के आसुरी तरीके मन में आने लगते हैं। मन नहीं लग रहा, चलो उससे थोड़ी छेड़-छाड़ कर लूँ, मन बहल जाएगा। किसी शान्त बैठे व्यक्ति पर छींटाकसी करेंगे, मजाक करेंगे, हँसेंगे, यह है आसुरी स्वभाव। मानवीय स्वभाव वाला सोचेगा, न मैं किसी पर छींटाकसी करूँ, न कोई मुझ पर करे। देवताई स्वभाव वाला सोचेगा, मैं किसी के साथ ऐसा करूँगा नहीं, पर कोई मुझ पर कर देगा तो उसे माफ कर दूँगा। यह सबसे बड़ी सेवा है। ऐसे आचरण से दुराचारी भी सदाचारी बन जाते हैं।

घर का त्याग नहीं, कुसंस्कारों का त्याग

मनुष्य समाज में, परिवार में रहता है। अपने परिवार से प्रेम होने का दावा करता है। कोई उसे कहे, आप अपने परिवार के अमुक सदस्य को हमें दे दो, तो वह इन्कार करेगा, नाराज हो जाएगा, कहेगा, यह आप क्या मांग रहे हैं? लेकिन यही व्यक्ति जब गुस्सा करता है, व्यसन सेवन करता है तो पत्नी की भूख और नींद उड़ जाती है, बच्चों का चैन चला जाता है, वे भय के साए में साँस लेते हैं। तो क्या यही प्यार है? प्यार का अर्थ है, मेरे घर का हर व्यक्ति चैन से रहे, सुकून से जीए और उसके सुख के लिए मैं अपना परिवर्तन कर लूँ। तो क्या हम अपने परिवार-जन की खुशी के लिए अपना स्वभाव नहीं बदल सकते? यदि मेरे क्रोध के त्याग से, व्यसन के त्याग से परिवार और समाज के अनेक लोग सुखी हो सकते हैं तो क्यों नहीं मैं यह त्याग कर दूँ। भगवान कहते हैं, घर का, घर के सदस्यों का त्याग नहीं, पर घर को नरक बनाने वाले कुसंस्कारों का त्याग ही सबसे बड़ा त्याग है।

ब्र.कु. आत्म प्रकाश

बच्चू बादशाह, पीरू वजीर

ब्रह्माकुमार निर्विकार नरायण श्रीवास्तव
मिश्रिख तीर्थ (उ.प्र.)

बच्चू बादशाह है कामशत्रु, क्रोध बना पीरू वजीर।
मानव के उत्थान-पतन की, यह देखो अद्‌भुत नजीर।।

सतयुग में सोने की चिड़िया, इस भारत को कहते हैं।
राग-द्वेष का नाम नहीं और गाय-शेर संग रहते हैं।।
श्रेष्ठ कर्म करके सतयुग हित बना रहे हम तकदीर।
मानव के उत्थान-पतन की................।।

त्रेता के आते ही सम्पूर्णता खत्म हो जाती है।
दो कलाओं का ह्रास हुआ, जो तीर-कमान बताती है।।
आदि सनातन देवी-देवता धर्म की मिट गई लकीर।
मानव के उत्थान-पतन की................।।

द्वापर के आते ही सब वाम-मार्ग में जाते हैं।
सृष्टि विकारी रच करके फिर दृष्टि बुरी बनाते हैं।।
दिव्य गुणों का पतन हुआ, पूरे बन गये फकीर।
मानव के उत्थान-पतन की................।।

कलियुग के प्रवेश होते ही बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।
ईश्वर को सब भूल गये, पूज्य प्रकृति बन जाती है।।
दुख-अशान्ति जन-जन में व्यापी, मानव हुआ अधीर।
मानव के उत्थान-पतन की................।।

रावण की सेना के पांचों मुखिया बड़े धुरन्धर हैं।
जो मानव, देव बने थे, आज गुणों में बन्दर हैं।।
परमपिता ने आ संगम पर बुद्धि करी सगीर।
मानव के उत्थान-पतन की, यह देखो अद्‌भुत नजीर।।
बच्चू बादशाह है कामशत्रु, क्रोध बना पीरू वजीर।।

दो चीजों को कभी व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए
अन्न के कण को और दिव्य आनन्द के क्षण को

‘पत्र’ संपादक के नाम

अक्टूबर, 2017 अंक में प्रकाशित सम्पादकीय ‘‘पापों से बचने का उपाय’’ पढ़कर आत्मदीप मुग्ध हुआ। कर्म के इस गुह्य ज्ञान को जाना कि ‘‘दुख को फैलाएँ नहीं, मिटाएँ।’’ यह जीवन जीने का एक नया अन्दाज है और प्रशंसा योग्य है। दैनिक जीवन में पाप से बचने के लिए स्वदर्शन कर, पाप को ज्ञान रूपी सुदर्शन-चक्र से काटना होगा।

रत्ना दास घोष, पूर्णिया (बिहार)

सितम्बर, 2017 अंक में प्रकाशित ‘‘मूल्य शिक्षा – शिक्षा प्रणाली की ज्वलन्त आवश्यकता’’ तथा ‘‘तकनीक के साथ मूल्यों को भी जोड़ें’’ – ये दोनों लेख सरकार, शिक्षा विभाग एवं जनसाधारण की आँखें खोलने वाले हैं। आज के भौतिक वातावरण में मनुष्य, जीवन के वास्तविक लक्ष्य से भटक रहा है। मानवीय मूल्य तार-तार होते दीख रहे हैं। तकनीकी शिक्षा पर ज्यादा जोर दिया जाना अच्छी बात है किन्तु इसके साथ आध्यात्मिक शिक्षा का भी समावेश होना अत्यावश्यक है। चरित्र निर्माण के लिए अध्यात्म एक अति आवश्यक विषय है। इनके अतिरिक्त ‘सम्पादकीय’, ‘संजय की कलम से’ तथा ब्रह्माकुमार-कुमारियों के व्यक्तिगत अनुभव प्रत्येक अंक में प्रेरणा के अविरल स्रोत हैं। देहाभिमान से मुक्ति के लिए ‘‘ज्ञानामृत’’ संजीवनी बूटी की तरह है।

नित्यानन्द जोशी, पाटली, बागेश्वर (उत्तराखण्ड)

नवम्बर, 2017 अंक में प्रकाशित ‘क्षमाशीलता’ एक उत्कृष्ट लेख है। ऐसे गुणों को धारण करने से ही चरित्र का विकास होता है। द्वेष, घृणा, अहंकार के त्याग से हम अपने जीवन में जो जगह बनाते हैं वह आत्मिक विकास की बुनियादी शर्त है।

ब्र.कु.धर्मेन्द्र कुमार गुप्त, इंदौर

नवम्बर, 2017 अंक दिल को छू लेने वाला है। विशेषकर ‘त्याग व सेवा की मूरत माता’ को पढ़ने से मुझे बार-बार यही संकल्प आए कि बाबा, मैं कभी भी माताओं के सम्मान के विपरीत ना सोचूँ। पूरी प्रकाशन टीम को बधाई।

भूपसिंह जांगड़ा, सिरसा (हरियाणा)

दिसम्बर, 2017 अंक में ब्र.कु.गीता बहन (शान्तिवन) का लेख ‘धर्मभ्रष्ट से धर्मनष्ट’ बहुत हृदयस्पर्शी है। इसमें बताया गया है कि कैसे धर्म के नीति-नियम मनुष्य जीवन के निर्माण में उपयोगी हैं, किस प्रकार से धर्म ही आत्मशुद्धि का साधन है और कैसे गुणों को धारण करना ही सच्चा धर्म है। यह भी स्पष्ट किया है कि कैसे धर्म का संबंध आत्मा से है, न कि शरीर से। यह भी बताया है कि कैसे धर्मभ्रष्ट से धर्मनष्ट की ओर बढ़ रहे समाज को परमात्मा की यथार्थ पहचान द्वारा सत्धर्म की ओर ले जा सकते हैं।

ब्र.कु.शिवानंद, आबू पर्वत

अक्टूबर, 2017 अंक का लेख ‘फौलादी विचार, नारी मुक्ति का आधार’ में निम्नलिखित वाक्यों ने यथार्थत: नया बोध देकर मन-बुद्धि दोनों को झंकृत कर दिया – (1) स्त्री-पुरुष दो जातियाँ नहीं, एक ही मानव जीवन के दो अंग हैं। (2) नर-नारी समाज के दो पाँव हैं। (3) नर और नारी दोनों समाज के अभिन्न अंग हैं, एक अंग यदि दूसरे अंग से अन्याय करता है तो इससे सारे समाज रूपी शरीर को हानि पहुँचती है। संयुक्त संपादिका बहन के हर लेख में नवीनता व मौलिकता की युगल सृष्टि को देख सदा अभिनंदन करने का; दिल से दिल करता है। बहुत-बहुत धन्यवाद।

शम्भूप्रसाद शर्मा, जयपुर (सोडाला)

प्रश्न हमारे, उत्तर दादी जी के

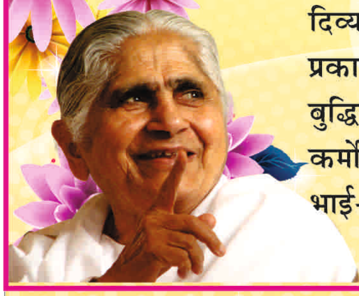

दिव्य बुद्धि के वरदान से विभूषित आदरणीया दादी जानकी जी, हर प्रकार के प्रश्नों के उत्तर देकर आत्मा को संतोष से भर देती हैं। बुद्धिवानों की बुद्धि बाबा ने उन्हें ऐसी कला प्रदान की है कि वे उलझे कर्मों की गुत्थियाँ सुलझाकर समाधानस्वरूप बना देती हैं। प्रस्तुत हैं भाई-बहनों द्वारा पूछे गए प्रश्नों के दादी जानकी द्वारा दिये गये उत्तर

– सम्पादक

प्रश्न- हमारी वृत्ति में क्या भाव रहे जिससे हम सेवा करते हुए सदा सुरक्षित रहें?

उत्तर- संगमयुग पर जब से बाबा के बने हैं, शरीर छूटने की घड़ी आए तब तक हम स्टूडेन्ट हैं। स्टूडेन्ट लाइफ में पढ़ाई पर जितना अटेन्शन दो उतनी कमाई है। कमाई माना पैसा कमाते हैं – नहीं। कमाई माना बाबा की शक्ति जमा हो रही है। जिन्होंने जितनी कमाई की है, पढ़ाई पढ़ी है, अन्त मते वही काम में आती है। ये पाँचों अंगुलियाँ बराबर नहीं हैं पर समय पर अपना-अपना काम करती हैं। किसी अंगुली को कुछ कहना नहीं पड़ता है कि इस समय यह कर, यह कर। नहीं। पाँव अपना काम करता है, हाथ अपना काम करता है। भले ही मैं यहाँ बैठी हूँ, आप वहाँ बैठे हैं परन्तु किसलिए बैठे हैं? एक-एक बात की गहराई में जाकर, रहस्ययुक्त बातें करके कमाई करने के लिये। संगम का थोड़ा समय है, जो करना है जल्दी करो। जल्दी माना जल्दबाजी नहीं परन्तु मिस नहीं करो क्योंकि जैसा कर्म मैं करूँगी, मुझे देख और करेंगे। कोई मेरे कर्म देखकर करे न करे, पर कर्म मैं ऐसा करूँ जो दूसरों को सहज कुछ प्राप्ति हो। हमारा आपस में कोई स्वार्थ नहीं है, कोई भी कार्य में निस्वार्थ भाव होने के कारण करते हुए कर्त्तापन के भान से परे हैं। मैं करता हूँ, मुझे करना है, यह थोड़ा सम्भल कर बोलो। मैं तो भाग्यवान हूँ जो श्रीमत पर श्रेष्ठ कर्म करना परमात्मा बाप ने सिखाया है। यह राजयोग, कर्मयोग है। राजयोग ऐसा नहीं है कि मैं सिंहासन पर बैठ जाऊँ, ताज पहन कर तख्त पर बैठ जाऊँ। नहीं। राजयोग माना कर्मेन्द्रियों का गुलाम नहीं बनना है। मन का गुलाम नहीं बनना है। भले निर्मानचित्त हो करके सेवाधारी बनें पर मैं गुलाम हूँ, यह सोचने का कोई मतलब ही नहीं है। जरा भी अभिमान कोई भी प्रकार से हमारे ऊपर वार न करे। संगमयुग पुरुषार्थ करने का युग है, सारे कल्प में ऐसा पुरुषार्थ कराने वाला कभी नहीं मिलेगा। हम करने वाले हैं, वो कराने वाला है। इस भावना से, सच्चाई और प्रेम से दिन भर कमाई होती है, रात को सोते समय भी चेक जरूर करते हैं कि आज क्या कमाई हुई? क्योंकि कमाई में थोड़ा अटेन्शन जरूर देना है। खबरदार, होशियार और सावधान रहना है। हम निमित्त सेवाधारी हैं। सूरत में भारीपन नहीं है, हल्के हैं। यह करना है, यह करना है... नहीं। हो जायेगा। अच्छा ही होगा, हुआ ही पड़ा है। तो कभी यह नहीं सोचना या कहना कि यह काम कैसे होगा? जहाँ, जिस घड़ी, जिस प्रकार की सेवा है, उस समय वही करने में शोभा है। यह भी अच्छी चेक करने वाली बात है कि त्यागवृत्ति, तपस्वीमूर्त, सेवाधारी – यह मेरा पार्ट कैसे चल रहा है। जब ज्ञान में आये तो कोई न कोई कोने में बैठकर अपने आपको चेक करना बड़ा अच्छा लगता था। सेवा तो आजकल कई प्रकार की है परन्तु सेवा के साथ त्यागवृत्ति से सेफ्टी है। मेरा-मेरा-मेरा ... कोई भी चीज़ पकड़ कर रहो तो वो भी हमारा पीछा छोड़ती नहीं है, तो यह भी वेस्ट ऑफ टाइम है।

प्रश्न- बुद्धि में अच्छे संकल्प कब पैदा हो सकते हैं?

उत्तर- धीरज, शान्ति और प्रेम से रहो तो जो भी सेवा हो,

कहीं भी सेवा हो वो सहज हो जाती है, योग भी लगता है, कार्य भी होता है। योग कैसे लगाऊँ, किसी को यह समझ में न आता हो वो पाण्डव भवन में जाकर चारों धामों की यात्रा करके देखे कि कैसे योग लगता है। बाबा के रूम में, झोपड़ी में, हिस्ट्री हॉल, शान्ति स्तम्भ में वन्डरफुल अनुभव होंगे। बाबा हम बच्चों को सदाकाल के लिये सुख, शान्ति, प्रेम सम्पन्न बना रहा है, सर्वगुण सम्पन्न बना रहा है। शुक्रिया बाबा आपका, संगमयुग पर हमको सर्वगुण सम्पन्न बनाने में इतना साथ दिया है। कहता है, बच्चे तुम मेरे साथी हो ना। मेरा साथी स्वयं भगवान, तो क्या करेगा माया का तूफान... कुछ नहीं कर सकता है। ऐसे नहीं, माया हैरान करे। नशा चढ़ा हुआ है, पक्का अनुभव है, भगवान हमारा बाप है और साथी भी है। मंजिल ऊंची है, अब घर जाना है। उसके पहले थोड़ी भी कोई फरियाद नहीं। याद में मन ऐसा शान्त (मनजीत) हो तो बुद्धि में सुन्दर संकल्प पैदा होते हैं, वो संकल्प कई काम करते हैं।

प्रश्न- हम गुप्त रूप में बाबा को याद करते हैं, उससे विश्व को क्या लाभ है?

उत्तर- हम सब एक-एक ब्रह्माकुमार, ब्रह्माकुमारियों का पार्ट बहुत अच्छा है इसलिए सब वन्डरफुल हो। हम सबको अन्दर में यह नशा है कि हम बाबा को याद करते-करते परमधाम में जाके सतयुग में आने वाले हैं। और कोई बात बुद्धि में नहीं है। थोड़ा भी किसी के मन में, बुद्धि में अगर कलह-क्लेश हो, तो आज उसे इस यज्ञ में स्वाहा कर दो। बाबा को याद रखना माना याद की यात्रा में रहना। तो हम कौन और किसके हैं, यह एक-दो को इशारे से बतायें कि वो यहाँ इसके तन में है। वन्डरफुल है। बहुत अच्छा है ना। बाबा मुरली में जो भी डायरेक्शन देता है उसे करने के लिये हम सब प्रैक्टिकल में बैठे हैं। इतने हम आज्ञाकारी, वफादार, ईमानदार बाबा के बच्चे हैं। अब हरेक अपने आपको देखे। आज्ञाकारी बनने से बहुत सुख मिलता है। दुनिया में दु:ख बहुत है, पर हमारे पास सुख बहुत है। दुनिया का दु:ख दूर करने के लिये, यहाँ हम गुप्त बाबा को याद करते हैं, उस याद का प्रभाव सारे विश्व में पहुँचता है। तो ऐसी सेवा करने से बाबा भी खुश, हम भी खुश, आप भी खुश क्योंकि खुशी जैसी खुराक नहीं। चिंता करना हमारा धर्म नहीं है। जो बाबा सिखा रहा है वही कर्म करने का है। हम बहुत अच्छे पदमापदम भाग्यशाली हैं। यह नशा है ना सभी को। इस नशे में फायदा है, बाकी सब नशों में नुकसान है।

प्रश्न- बाबा की मदद मिलने का आधार क्या है?

उत्तर- मेरे से कोई ने पूछा कि आप में शक्ति कहाँ से आती है? मैंने कहा, हम फालतू बातें न सुनते हैं, न सुनाते हैं। न पराई बात, न पुरानी बात। बीती को चितवो नहीं, आगे की न रखो आश। जो बात बीती, वह बीत गई, अब मुझे क्या करना है? देह, सम्बन्धी से न लगाव है, न झुकाव है, न टकराव है इसलिये हर एक बाबा का बच्चा, एक-दो से न्यारा है, दो एक जैसे नहीं हैं। परन्तु अन्दर से हमारी भावना है, एक-दो को खुश देख खुशी होती है क्योंकि पता है, हरेक का पार्ट अपना है। ऐसा संगठन कितना मीठा है, कितना प्यारा है। सब कैसे खाते हैं, कैसे रहते हैं परन्तु मुझे खुशी यह है कि सभी का खान-पान शुद्ध है। ऐसे है ना! सफेद कपड़ा, खीसा खाली, सिम्पल रहने से इतनी सेवा हो रही है। तो इस संगठन में आने से और आप सबको मिलने से शक्ति आती है। सभी के मन, वाणी, कर्म शुभ-श्रेष्ठ हैं। अभी हमको क्या करने का है? कराने वाला करा रहा है, करने वाले सब कर रहे हैं। मैं क्या कर रही हूँ, यहाँ बाबा मेरा साथी है, यहाँ साक्षी होकर के हर आत्मा का पार्ट देख-देख हर्षित होती हूँ। कभी कोई कहेगा, तुम खुश हो? मैं खुश हूँ ना। बहुत अच्छा है ना। बस, मेरे को खुश देख आप सब खुश होते हो, यह अच्छी बात है। तो अपने मन, वाणी, कर्म को चेक करते हैं, कोई घड़ी भी, कोई मिनट भी खराब नहीं है। मन शान्त, बुद्धि शुद्ध, संस्कार श्रेष्ठ तो सब इज़ी है। जब मन, वाणी, कर्म श्रेष्ठ हैं तो बाबा की बहुत मदद है क्योंकि बाबा देखता है। ❖

कोई भी वस्तु खुशी नहीं देती

ब्रह्माकुमारी शिवानी बहन, गुरुग्राम (हरियाणा)

हमें हर दिन कुछ नयी चीजें खरीदने की इच्छा होती है। यह कार्य दो स्तर पर हुआ, एक तो हम अपनी खुशी को साधनों में ढूँढ़ते हैं और दूसरा, हमें चीजों को इकट्ठा करने का नशा चढ़ गया है। हम खुशी को धन से खरीदने की कोशिश करते हैं। खुशी को प्रभावित करने वाला यह बहुत बड़ा कारण है।

जैसे ही हम उन चीजों को देखते हैं तो उनके साथ जुड़ जाते हैं। जैसे कि एक शोकेस को पार करते हुए हम देखते हैं कि उसमें गाड़ियाँ हैं या ड्रेस हैं। क्रॉस करने के बाद भी वह शोकेस मन में बना हुआ है, यही लगाव है। जैसे कोई फिल्म देखने के बाद भी उसका हीरो मन में बना रहता है। फिर मन वर्तमान में न होकर, लोगों के साथ, उस वस्तु के साथ या उस परिस्थिति के साथ जुड़ जाता है। जब हम उस वस्तु को खरीद लेते हैं तो अच्छा लगता है। इन्हें हम कहते हैं 'सुख-सुविधाओं के साधन' माना सुख भी और सुविधा भी। सुविधा निश्चित रूप से आरामदायक होती है लेकिन हमने सुविधा और खुशी दोनों को मिला दिया है और इसलिए मन में यह प्रक्रिया चलती रहती है कि यह खरीदना है...वह खरीदना है...ये आयेगा तो खुशी मिलेगी।

हमने पहले चार लाख की गाड़ी खरीदने की सोची, फिर गाड़ी का चुनाव करते-करते हम चालीस लाख की गाड़ी तक पहुँच गये। इससे गाड़ी की विशेषतायें बढ़ गयीं, तो हमारी खुशी भी उतनी ही बढ़ गई।

शुरू में जब मैं वो गाड़ी चलाती हूँ तो उसकी विशेषताओं को उपयोग में लाती हूँ और उसका आनंद उठाती हूँ। यह एक नवीनता है, एक उत्सुकता है, मुझे गाड़ी अच्छी लग रही है लेकिन कितनी देर तक? वो गाड़ी आराम दे रही है, वो बहुत अच्छी चल रही है। उसका ए.सी.बहुत अच्छा है, उसका म्युजिक सिस्टम बहुत अच्छा है, माना कि उसका सबकुछ अच्छा है। ये चीजें मेरे कानों के लिए, मेरे बैठने की स्थिति के लिए बहुत ही आरामदायक हैं। ये आज आरामदायक हैं, कल भी आरामदायक होंगी और हमेशा आरामदायक रहेंगी। उनका सुख देने का पैमाना बदलने वाला नहीं है लेकिन क्या हमारा खुशी का पैमाना भी कार के साथ स्थिर रहेगा? विचार कीजिए, कार्यालय से निकलते हुए बॉस के साथ किसी बात पर आपका झगड़ा हो गया, अब आप जाकर बैठ गये उस चालीस लाख की गाड़ी में तो आप आराम अनुभव करेंगे? हमने शारीरिक आराम और खुशी दोनों को मिला दिया है और इस कारण केवल आराम पाने में लगे रहते हैं। चालीस लाख की गाड़ी में बैठकर भी हो सकता है कि मैं बहुत परेशान हूँ, बहुत दुखी हूँ। जीवन में इतनी उलझनें हैं कि मैं कभी-कभी आत्महत्या करने की सोचने लगती हूँ। कार के पास वो क्षमता नहीं है कि वो मेरी जिंदगी की समस्याओं को हल कर सके। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि कार आराम दे सकती है लेकिन खुशी नहीं।

अगर मैं गुस्से में हूँ और गाड़ी में जाकर बैठ जाती हूँ। गाड़ी में बैठकर भी आराम अनुभव नहीं होता है तो मुझे और अधिक गुस्सा आ जाता है। जब कोई विपरीत परिस्थिति हमारे सामने आती है तब गाड़ी खरीदने से मिली खुशी क्यों याद नहीं आती?

हमने पहली बार जब गाड़ी खरीदी थी तो उस समय घर के सभी लोग बहुत खुश और उत्साहित हुए थे लेकिन कितने दिनों तक? आठ दिन, दस दिन, महीना, दो महीना, फिर उसके बाद, जैसे बाकी चीजें घर में पड़ी होती हैं उसी प्रकार ये भी एक वस्तु की तरह पड़ी होती है। फिर वही जीवन, वही बहस, वही दिनचर्या शुरू हो जाती है। फिर हम कहते हैं कि अब कौन-सी नयी वस्तु खरीदें जिससे कि खुशी मिले।

मेरे परिवार में चार लोग हैं और थोड़ा-सा हम कहीं-न-कहीं एक-दूसरे से असंतुष्ट हैं तो उसे दूर करने के लिए घर के लिए एक नयी चीज खरीदकर ले आती हूँ जिससे कि पूरे घर का वातावरण बदल जायेगा और सारे लोग खुश भी हो जायेंगे। मैं एक प्लाज्मा टी.वी.खरीदकर ले आयी। अब सब एक-दूसरे से अच्छी तरह से बातें कर रहे हैं, सब बहुत उत्साहित हैं, कहते हैं कि आज तो पार्टी होनी ही चाहिए।

घर के सब लोगों का ध्यान उस वस्तु पर है। उसके आने से घर का पूरा ऊर्जा का स्तर ही बदल गया है। लेकिन सवाल यह है कि आप बार-बार कितनी चीजें खरीदते रहोगे? कितनी बार साल में नयी गाड़ियाँ खरीदोगे? कितनी बार नये टेलीविजन खरीदोगे? कितनी बार नये मोबाइल खरीदोगे?

बाजार में कोई नयी वस्तु आयी तो इच्छा होती है कि हम उसे भी ले लें। लेकिन कई बार देखा है कि इन चीजों के पीछे ही घर में तनाव का वातावरण बनता है कि मेरे घर में ये नहीं है, उनके घर में ये है, हमारे पास ये होना चाहिए। वस्तु खरीद तो रहे हैं खुशी के लिए लेकिन वो पैदा कर रही है तनाव? जो भी हम खरीद रहे हैं उनके बारे में बहुत ही अच्छी तरह से समझ लेना चाहिए कि ये शरीर को आराम देने के लिए बनी हैं, मन को खुशी देने के लिए नहीं। शरीर को आराम देने के साधन इकट्ठे करने में हम अपने मन को सारा दिन परेशान कर रहे हैं और उसमें ईर्ष्या तथा प्रतिस्पर्धा की भावना पैदा कर रहे हैं। ❖

खत्म हुआ अकेलेपन का अहसास

ब्र.कु. वी.के.होशियार सिंह, पटियाला (पंजाब)

सन् 2003 में सेवानिवृत्ति होते ही सब तरफ से भारमुक्त होने का अहसास मेरे रोम-रोम में उतर गया। मेरी युगल और मैं भारत भ्रमण के सुखद ख्यालों में खो गए लेकिन ये ख्याल एक स्वप्न मात्र ही रह गये क्योंकि युगल को एक गम्भीर बीमारी ने घेर लिया और बीमारी से जूझते हुए वह सन् 2009 में मुझे अलविदा कह गई।

युगल के जाने के बाद मैंने अपने आप को इस संसार रूपी जंगल में अकेले पाया। दूर-दूर तक कोई सहारा नजर नहीं आया। धार्मिक ग्रंथों का नियमित अध्ययन करते रहने के बाद भी, भिन्न-भिन्न गुरु धारण करने से भी मुझे शान्ति और सन्तुष्टि नहीं मिली। मैं एक के बाद एक संस्थाओं से जुड़ता गया लेकिन पाया कि उनका बाहरी चरित्र कुछ और था और अंदरुनी कुछ और। उनको समझने और छोड़ने में ज्यादा देर नहीं लगी।

अन्त में एक मित्र ने मुझे बताया कि ब्रह्माकुमारीज का 'पीस ऑफ माइंड' चैनल देखो, वहीं पर आपको अपनी समस्या का समाधान मिलेगा। मैंने देखना शुरू किया। अच्छा लगा। रुचि बढ़ती गई और ईश्वरीय ज्ञान दिल में उतरता चला गया। इसके बाद सेवाकेन्द्र पर आकर तपस्वी बहनों से सात दिन का कोर्स किया और मुरली क्लास में नियमित जाने लगा। ज्ञान समझ में आता गया, बाबा में विश्वास बढ़ता गया, मन की बेचैनी घटती गई और शान्ति बढ़ती गई। अकेलेपन का अहसास कम होने लगा, बाबा का साथ महसूस होने लगा। अमृतवेले योगाभ्यास से आत्मिक शक्ति बढ़ती गई। इससे मुझमें धैर्य और निर्भयता का विकास होने लगा। पहले किसी भी काम में देरी होने के साथ-साथ किसी अनिष्ट की आशंका से परेशान हो जाता था लेकिन अब किसी भी परिस्थिति से विचलित होना स्वत: ही बन्द हो गया है।

अगस्त, 2016 में मैं ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ मधुबन गया। वहाँ की व्यवस्था, भव्यता, अनुशासन और निस्वार्थ सेवा देखकर बाबा में मेरा विश्वास अटूट हो गया। अब यही इच्छा होती है कि बार-बार मधुबन आऊँ और शेष जीवन यहीं बाबा की सेवा में लगा दूँ। राजयोग के अभ्यास द्वारा मेरे जीवन में सुख-शान्ति लौट आई और स्वास्थ्य में भी सुधार हुआ। अब पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हूँ। बाबा के विश्वास ने मेरा जीवन ही बदल दिया। जीवन अचल-अडोल हो गया। शुक्रिया बाबा। ❖

वेलेन्टाइन डे पर विशेष...

मिठास के आवरण में जहर

ब्रह्माकुमारी उर्मिला, संयुक्त संपादिका

हम सभी जानते हैं कि नदी अपने उद्गम स्थल अर्थात् पर्वतीय रास्ते में अति स्वच्छ होती है परन्तु ज्यों-ज्यों मैंदानों की ओर बढ़ती है, इसमें कुछ अशुद्धियाँ मिलनी प्रारम्भ हो जाती हैं। आगे बढ़ने के क्रम में इन अशुद्धियों की मात्रा इतनी बढ़ती है कि एक समय आने पर नदी एक गन्दे नाले में बदल जाती है जिसका उद्धार पुन: सागर में समाकर ही सम्भव हो पाता है।

समय के साथ बदलती हुई प्रेम की धारा

पानी की नदी की तरह ही, प्रेम के सागर से प्रेम रूपी जल लेकर, आत्मा रूपी नदी जब सृष्टि रूपी कर्मक्षेत्र पर बहना प्रारम्भ करती है तो प्रेम का रूप अति शुद्ध, उदात्त, निष्कलंक, नि:स्वार्थ, निष्पाप, निर्विकार और आल्हादकारी होता है। सतयुग में यह प्रेम मस्तकमणि से झरता है। एक-दूसरे के मस्तक में स्थित मणि को देखते हुए हम प्रेम रूपी ऊर्जा का आदान-प्रदान करते हैं। मस्तक से झरता हुआ प्रेम का प्रवाह, सम्पूर्ण शरीर रूपी प्रकृति को प्रकाशमान, आकर्षक, स्वस्थ और दीर्घजीवी बना देता है। त्रेतायुग में प्रेम रूपी नदी मस्तक से नीचे उतरती हुई नेत्रों की तरफ बढ़ती है जहाँ सतोप्रधान आत्मिक दृष्टि द्वारा प्रेम की ऊर्जा का लेन-देन होता है। परन्तु जैसे-जैसे काल-चक्र और आगे बढ़ता है, प्रेम की निर्मल धारा में अशुद्धियाँ आनी शुरू हो जाती हैं। प्रेम रूपी नदी नेत्रों से भी नीचे उतर कर, हाड़-माँस से बने शरीर के विभिन्न अंगों के रूप-रंग के आकर्षण-विकर्षण के कूड़े-कचरे को अपने में मिलाती हुई, अन्त में शूद्र अंगों के आकर्षण की सड़ान्ध से गटर में बदल जाती है।

जीयदान से जीवघात तक

परिणाम यह निकलता है कि शारीरिक आकर्षक जनित अनेक कटु भाव जैसे कि शोषण, अधिकार-भाव, हेयदृष्टि, तुलना-दृष्टि, दबाव, ईर्ष्या, द्वेष, स्वार्थ, दिखावा, हिंसा आदि प्रेम के इस निर्मल प्रवाह में मिलकर इसे आत्मधाती बना देते हैं। जीयदान देने वाला शुद्ध प्रेम, अशुद्धि मिलने पर जीवघात कराने वाला, बदनाम कराने वाला, मुकदमों में उलझाने वाला, पीढ़ी-दर-पीढ़ी वैर बांधने वाला और शारीरिक-मानसिक व्याधियों की चपेट में लेने वाला बन जाता है। वर्तमान समय हम काल-चक्र के उस दौर से गुजर रहे हैं जब काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार रूपी काले कर्मों पर लोग 'प्रेम' का आवरण चढ़ाकर धोखा खा रहे हैं, धोखा दे रहे हैं और हीरे तुल्य जीवन के समय, श्वास, संकल्पों को कौड़ियों के भाव लुटा रहे हैं।

आवरण में छिपी कटारी

प्रेम एक पुनीत भाव है जो आदि-मध्य-अन्त सुख देता है जबकि काम रूपी कलुषित भाव, आत्मा को आदि-मध्य-अन्त दुख में धकेलने वाली एक तेज धार कटारी है। लेकिन जैसे लोग कटारी को छिपाकर रखते हैं इसी प्रकार काम-कटारी भी 'प्रेम' के सुनहरे आवरण से ढकी रहती है। प्रेम की आड़ लेकर इस कटारी से एक-दूसरे की आत्मा का घात किया जाता है। इस घात-प्रतिघात में कोई हलके घाव खाता है तो कोई गहरे घाव झेलता है। जब आवरण के नीचे का असली रूप समझ में आता है तब तक जिन्दगी लुट चुकी होती है।

'वूमन ऑन टॉप' पत्रिका के 2010 के अंक में एक लेख छपा था, 'एक खूबसूरत सुबह ने मेरी जिन्दगी में अंधेरा भर दिया।' लेख में एक महिला की आपबीती थी। पी.एच.डी.की डिग्रीधारी वह महिला, प्लेन में अपने बाजू में बैठे एक सुन्दर भारतीय नवयुवक के गोरे रंग और तीखे नयन-नक्श को देखकर उसी समय उससे शादी का

फैसला कर लेती है। परिवार वालों के बहुत समझाने पर भी, सबकी नाराजगी सहकर भी शादी के फैसले पर अडिग रहती है और उसके साथ अमेरिका में बस जाती है। एक वर्ष के बाद एक पुत्र जन्म ले लेता है और तब महिला को पता पड़ता है कि इस व्यक्ति की अलग-अलग देशों में और भी कई बीवियाँ हैं। उसे सदमा लगता है। वह अपने पुत्र को लेकर अमेरिका से भारत में भाग आती है। वह व्यक्ति कोर्ट में केस दर्ज कर देता है कि मेरी पत्नी, मेरे पुत्र को, जो अमेरिका का नागरिक है, लेकर भारत गई है, मुझे मेरा पुत्र वापस चाहिए। अब अमेरिकन पुलिस इस महिला से वह पुत्र लेने के लिए उसके पीछे लगी है। इस लेख के अन्त में दो प्रश्न उठाए गए हैं, (1) क्या वह जिंदगी की मंझधार से बाहर निकल पाएगी? (2) इस स्थिति के लिए कौन जिम्मेवार है?

समस्या के मूल में है असंयम

इस समस्या के मूल की ओर जाएँ तो सामने यही आता है कि कभी वेलेन्टाइन डे के नाम पर और कभी फिल्मों या अन्य संचार के साधनों या साहित्य, कथा, कहानी, गीत, संगीत के माध्यम से परोसे गए दैहिक, काम-वासना से भरे हुए प्रेम-प्रसंगों को देख-देख अपनी निर्णय शक्ति को कुण्ठित कर लेने वाले युवक-युवतियाँ स्वेच्छाचारी बन जाते हैं। स्वतन्त्रता के जन्मसिद्ध अधिकार की दुहाई देकर उच्छृंखलता, अमर्यादा, असंयम और बेहयाई का खुला प्रदर्शन करते हैं। समाज और परिवार के लोग 'नया खून' का नाम देकर इनके इस तरह के लज्जाहीन कर्मों को मन से या बेमन से मान्यता देते हैं या अनदेखा करते हैं या मन मसोसकर रह जाते हैं। युवक-युवतियों के अपरिपक्व मन पर लगी दैहिक आकर्षण की चोट उन्हें मनमानी करने पर मजबूर करती है। पहले-पहले देह-आकर्षण के नशे में वे मित्र-सम्बन्धी, समाज, माता-पिता सबको अनदेखा करते हैं परन्तु जब धोखा मिलता है और वापस लौटना चाहते हैं तो माता-पिता या मित्र उन्हें पहले वाले निष्कलंक रूप में स्वीकार नहीं कर पाते और वे जीवन भर भय, पश्चाताप, बीती का चिन्तन, हीन भावना, झूठ, छिपाव, दुर्भाव, अकेलापन, अविश्वास आदि नकारात्मक भावों की कारागार में कैदी बन तड़फते हैं।

काम विकार का यह आकर्षण जो 'प्रेम' नाम के सुनहरे पर्दे से ढका रहता है, खून, जेल, हथकड़ी तक भी पहुँचा देता है। यह समस्या केवल उपरोक्त महिला की नहीं है, अधिकांश नर-नारी काम-कटारी से हताहत होकर अपने घावों को छिपाए-छिपाए जिन्दगी की सांसें पूरी कर देते हैं। जो घाव बहुत रिसते हैं, समाज के सामने वो ही उभर कर आ पाते हैं।

बिना सोचे-समझे लिया गया निर्णय

इस विश्वव्यापी समस्या का समाधान है आध्यात्मिक ज्ञान। अध्यात्म कहता है – पाँच तत्वों से बना हुआ शरीर तो केवल ऊपर का आवरण है लेकिन व्यक्ति का चरित्र, व्यवहार, गुण और कर्म तो उस आवरण के पीछे छिपी हुई आत्मा में होते हैं, तो क्या हम केवल चमड़ी की सुन्दरता के साथ अपने जीवन का पल्ला बाँध सकते हैं? जब हम बाजार से पाँच सौ या हजार रुपये की कोई चीज खरीदते हैं तो भी उसके असली या नकली होने की पहचान कर लेना आवश्यक समझते हैं और बार-बार सोचते हैं कि कहीं मूल्य के संबंध में हमसे धोखा तो नहीं हो रहा है? लेकिन जीवन जैसे अनमोल तोहफे के बारे में फैसला करते समय – बिना किसी बड़े की राय लिये, बिना आगा-पीछा सोचे, रोज घटने वाली धोखे की घटनाओं से जागरुक हुए बिना, सेकंड में फैसला ले लेते हैं, यही विडम्बना है।

पहचानें अपने असली अस्तित्व को

सन्तान को माँ-बाप युवा होने तक हर सुख-सुविधा, लाड़-प्यार, पढ़ाई प्रदान करते हैं। वे माता-पिता उसके भविष्य के बारे में निर्णय लेते समय उसका अहित चाहेंगे क्या? पच्चीस साल तक अपने सीने से लगाये रखने वाले माँ-बाप पर तो बच्चे को अविश्वास हो जाता है और केवल

दो या चार घंटे के लिए पास बैठने वाले, गोरी चमड़ी का आवरण ओढ़े अनजाने व्यक्ति पर विश्वास हो जाता है। पच्चीस साल का प्रेम एक पलड़े में और पच्चीस मिनट का आकर्षण एक पलड़े में। उसने पल भर के आकर्षण के बदले में इतने वर्षों के माँ-बाप के प्यार और विश्वास को ठोकर मार दी। जब हम किसी को ठोकर मारते हैं तो दर्द को महसूस नहीं करते लेकिन जब हमें ठोकर लगती है तब महसूस होता है पर तब तक बहुत देर हो चुकी होती है। इसलिए आध्यात्मिकता ऐसी महिलाओं को संदेश देती है कि सबसे पहले वे अपनी असली अस्तित्व को पहचानें। शरीर केवल पाँच तत्वों का बना हुआ आवरण है, इसके भीतर आत्मा नाम की चेतन सत्ता विद्यमान है। आत्म-स्वरूप में स्थित होना ही अपने आप को सशक्त और सुरक्षित बनाना है। जब हम आत्मिक स्वरूप में टिक जाते हैं तो बाह्य आकर्षणों से उसी प्रकार बच जाते हैं जैसे वायु से रक्षित होने पर दीप-शिखा जगमगाती रहती है। ये आकर्षण तो झोंके की तरह हैं, जो हमारे अंदर के दीए को बुझाकर चलते बनते हैं। देह-अभिमान ही सर्व समस्याओं की जड़ है और आत्म-स्वरूप में टिकना ही सर्व समस्याओं का समाधान है। लेख में वर्णित महिला या उन जैसी अन्य महिलाओं से हमारा अनुरोध है कि वह आध्यात्मिक ज्ञान की शरण में आकर अपने आप को सशक्त बनायें, परमात्मा से अपना संबंध जोड़कर, जीवन को नि:स्वार्थ ईश्वरीय प्रेम से इतना भरपूर कर लें जो इस प्रकार के धोखे को पूरी तरह भूल जायें।

शिक्षा के साथ चाहिएँ आन्तरिक शक्तियाँ भी

एक अन्य पहलू पर भी हम ध्यान दें। लौकिक पढ़ाई की ऊँची डिग्री होते हुए भी हम जीवन की परीक्षाओं में क्यों धोखा खा जाते हैं? डिग्री रूपी कागज का टुकड़ा हमें 'नौकरी' तो दिला सकता है परन्तु आकर्षणों को 'ना करनी' है, यह शक्ति नहीं दे पाता है। यही कारण है कि देश का पढ़ा-लिखा वर्ग भी मनोबलहीनता का शिकार है, समस्याओं से ग्रसित है। शिक्षा के साथ-साथ निर्णय शक्ति, परखने की शक्ति, आत्म-नियन्त्रण की शक्ति, सामना करने की शक्ति, धैर्य की शक्ति, पारिवारिक शिष्ट आचरण की शक्ति आदि का विकास भी अनिवार्य है; नहीं तो 'पल भर का मजा और जीवन भर की सजा' इस कहावत को चरितार्थ होते देर नहीं लगती है।

काम है अंधकार और प्रेम है उजाला

वेलेन्टाइन डे मनाने वालों को इस दिन की बहुत-बहुत बधाई देने के साथ एक छोटा-सा अनुरोध है कि प्रेम की उजली नदी में देह के आकर्षण का कूड़ा-कचरा डालकर इसे मैली मत कीजिए। प्रेम आत्मा की मौलिक आवश्यकता है। परमात्मा प्रेम के सागर हैं। प्रेम के बिना जीवन खाली, खोखला और बेरंग है परन्तु प्रेम पर काम-वासना का आवरण चढ़ाने से जीवन काला, विभत्स, हिंसक, स्वार्थी, आसुरी, पैशाचिक, असत्य, अस्थिर, व्याधिग्रसित और अकालमृत्यु-ग्रसित हो जाता है। काम-वासना अंधकार है और आत्मिक-प्रेम उजाला है। काम-वासना, काल-कोठरी का दरवाजा दिखाती है और आत्मिक प्रेम, परमात्मा की प्यारी गोद का पात्र बनाता है। तो आइये, इस वेलेन्टाइन डे पर शुद्ध प्रेम की मिठास से तन-मन को भरपूर करें परन्तु ध्यान रखें, प्रेम के आवरण में छिपे काम-वासना के जहर से ठगे ना जाएँ।

तन, मन, जीवन, सम्बन्ध – सबको महका देने वाले, अपनी शुद्धता और शक्ति से हर पल, हर मौसम को रंगीन बना देने वाले, मौन रहकर भी आँखों और मस्तक से ईश्वर की प्रीत की चमक से जग को जगमग कर देने वाले ईश्वरीय प्रेम-प्याले को एक बार जीवन में अवश्य पीकर देखिए। अमरत्व से भरी इस प्रेम-नदी में अवगाहन करके कालिमा-कल्मष धो डालने का अनुभव पाइये। ईश्वरीय प्रेम की किरणों के स्पर्श से रोम-रोम पुलकित होने का अहसास कीजिए। यह दुर्लभ प्रेम अभी उपलब्ध है, केवल वर्तमान संगमयुग पर, 5000 वर्षों में केवल एक बार! ❖

आदिवासी कौन?

ब्रह्माकुमार नन्दराम हाँसदा, कतरासगढ़ (झारखण्ड)

मैं एक सरकारी बैंक में प्रबन्धक के पद पर कार्यरत हूँ। मेरा पैतृक निवास गाँव मोहनपुर, जिला पूर्वी सिंहभूम (झारखण्ड) है। आदिवासी समुदाय के अन्तर्गत मैं संभाल जाति की श्रेणी में आता हूँ। हमारे समुदाय को आदिवासी क्यों कहा जाता है, यह मेरी समझ से परे है। आदिवासी शब्द दो शब्दों के जोड़ से बना है – आदि + वासी। इनका अर्थ है आदिकाल में वास करने वाले। लेकिन भारत के आदिकाल में तो देवी-देवता वास करते थे जो कि सर्वगुण सम्पन्न, सोलह कला सम्पूर्ण, सम्पूर्ण निर्विकारी तथा शाकाहारी थे। इसके विपरीत आदिवासी नामधारी हम लोग गुणरहित, कलाविहीन, विकारों से आच्छादित एवं सम्पूर्ण (सौ प्रतिशत) माँसाहारी हैं। कोई भी त्योहार, शादी, श्राद्ध कर्म, जन्मोत्सव आदि हो, माँसाहार और हंडिया (दारू) अनिवार्य है। इनके बिना किसी आयोजन का कोई मान-सम्मान नहीं होता है। इष्ट-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए पशुओं की बलि दी जाती है। जल, थल और नभ में जो भी जीव-जन्तु और पशु-पक्षी हैं उनमें से कुछ को छोड़कर बाकी सभी का माँस मेरे समुदाय के लोग खाते हैं।

आदिवासी समुदाय का कठोर सत्य

हमारे समाज में डायन, भूत, पिशाच का बहुत प्रकोप है और उनसे निजात पाने के लिए ओझा, गुणी और तान्त्रिक लोग भी बहुत सक्रिय रहते हैं। उनको समाज में डॉक्टर से ऊँचा पद प्राप्त है। घर में किसी को कुछ दर्द, बुखार, बीमारी हो जाए या साँप-बिच्छू काट लेता है तो सबसे पहले ओझा, गुणी या तान्त्रिक को बुलाया जाता है। जब उनके झाड़-फूँक, बलि आदि के बाद भी बीमारी ठीक नहीं होती तो इलाज के लिए मरीज को डॉक्टर के पास ले जाया जाता है। उपर्युक्त सभी बातें सुनने में विचित्र, अटपटी, अविश्वसनीय लगती हैं लेकिन यह कठोर सत्य है।

ज्ञानामृत पढ़कर मिला असीम आनन्द

वर्ष 2008 में उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले के एक गाँव की शाखा में मेरी पदस्थापना की गयी थी। वहाँ मुझे ब्रह्माकुमारी संस्था का परिचय आस्था चैनल के माध्यम से मिला था। तब से नियमित रूप से इसका कार्यक्रम देखता आया हूँ। तीन वर्ष बाद मेरा स्थानान्तरण झारखण्ड राज्य के झुमरी तिलैया शहर में हुआ। एक बार रक्षाबन्धन के अवसर पर एक ब्रह्माकुमारी बहन रक्षाबन्धन का सूत्र, मिठाई और ज्ञानामृत पत्रिका लेकर शाखा में आई थी। उन्होंने वरिष्ठ शाखा प्रबन्धक और मुझे रक्षाबन्धन बाँधे और एक ज्ञानामृत पत्रिका भेंट की। जैसे ही मैंने वह पत्रिका देखी, सबकी नजर बचाकर फौरन अपने बैग में रख ली। घर जाकर उसे पढ़ा तो असीम आनन्द की अनुभूति हुई। पत्रिका ज्ञान-रत्नों से भरी हुई थी। मैंने उसी दिन ज्ञानामृत और वर्ल्ड रिन्युवल का वार्षिक शुल्क शान्तिवन प्रेस को भेज दिया। उसके बाद नियमित रूप से दोनों पत्रिकाएँ पढ़ता आया हूँ।

जरूरी है दवा के साथ दुआ

सन् 2014 में मेरा स्थानान्तरण निरसा शहर में किया गया। वहाँ खाने-पीने की बहुत समस्या थी इस कारण शरीर कमजोर और अस्वस्थ होने लगा। मुझे देखकर मेरी पत्नी को भी घर में तनाव और चिन्ता होने लगी। वे तो पहले से ही छाती और बदन-दर्द से परेशान रहती थी। बहुत डॉक्टर, कविराज, ओझा, गुणी से इलाज कराया गया लेकिन कुछ भी सुधार नहीं हो रहा था। इसी क्रम में निरसा में एक लेडी डॉक्टर के पास पत्नी को ले गया। उन्होंने पूरी जाँच की लेकिन किसी बीमारी का पता नहीं चला। तब डॉक्टर मैडम ने अपने क्लिनिक के बगल में स्थित ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र

जाने की सलाह दी और कहा कि दवा के साथ दुआ भी बहुत जरूरी है, दवा मैं दे रही हूँ, दुआ आपको ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र में मिल जाएगी। मुझे यह बात तीर की तरह लग गयी। मैंने पत्नी से सेवाकेन्द्र जाने का आग्रह किया पर उन्होंने असमर्थता जताई तो मैंने अकेले ही जाने का फैसला किया। दो दिन कोर्स करने के बाद मैंने भी जाना छोड़ दिया।

माँसाहार के विरुद्ध मार्मिक प्रवचन

जुलाई, 2015 में मेरा स्थानान्तरण कतरासगढ़ शहर में किया गया। कुछ दिन बाद स्थानीय सेवाकेन्द्र के निमित्त संचालक प्रकाश भाई से परिचय हो गया। उनकी एक बात, ''समय निकलता जा रहा है'' मेरे दिल पर लग गई और दूसरे दिन से साप्ताहिक कोर्स करना शुरू कर दिया। कोर्स के पाँचवें दिन प्रकाश भाई ने ''राजयोग की विधि एवं प्राप्ति" विषय पर प्रकाश डाला। उन्होंने समझाया कि राजयोग सीखने के लिए ब्रह्मचर्य, सात्विक आहार, दैवीगुण और सत्संग – इन चारों की धारणा एवं पालना अनिवार्य है। फिर पूछा, कोई समस्या है? तुरन्त मैं समझ गया कि उनका इशारा सात्विक आहार की ओर है। मैंने उत्तर दिया कि समस्या तो बहुत विकराल एवं कठिन है लेकिन कोई भी समस्या इतनी कठिन नहीं होती जिसका कि कोई समाधान न हो। इसके एक दिन पूर्व टी.वी. पर शिवानी बहन का एक प्रोग्राम देखा जिसका शीर्षक था "Matter of choice or chance". इसमें उन्होंने माँसाहार के कारण पशुओं पर अत्याचार और इसके दुष्परिणामों के बारे में बताया था जो कि बहुत ही मार्मिक एवं दिल को झकझोरने वाला था।

माँसाहार का पूर्ण परित्याग

कोर्स के बाद मैं घर चला गया। पत्नी ने माँस पका रखा था। सुबह का समय था। ऑफिस जाने से पहले मुझे खाना परोसा गया, मेरे होश उड़ गये। सोचने लगा कि अब इस खाने का क्या करूँ? कुछ सलाद परोसी गयी थी। पत्नी खाना परोस कर बाथरूम की तरफ चली गई, मुझे मौका मिल गया। मैंने सारा माँस बाहर रोड पर कुत्ते को खिला दिया तथा चावल में थोड़ा पानी डालकर सलाद के साथ खाकर चुपचाप ऑफिस चला गया। पत्नी को इसकी जरा भी भनक तक नहीं लगी। शाम को मैं होमियोपैथी के डॉक्टर से कुछ दवा की गोली लेकर आया और पत्नी को बता दिया कि डॉक्टर ने कुछ महीने के लिए माँस, मछली और अण्डे खाने के लिए मना कर दिया है। मुझे बी.पी.और शुगर की शिकायत थी। तब से लेकर मीट, मछली और अण्डे का सम्पूर्ण परित्याग कर दिया है। अब बाजार में आते-जाते सड़क के किनारे माँस और मछली की दुकान की तरफ मैं आँख उठाकर देख भी नहीं सकता हूँ।

हमारे देश में गो माता की हत्या बन्द करने के लिए विश्व हिन्दू परिषद्, बजरंग दल आदि कई आन्दोलन करते रहते हैं लेकिन सरेआम गाय के छोटे भाई बकरे, सुअर, भेड़ की हत्या कर उलटा लटका दिया जाता है, इस तरफ लोगों का ध्यान क्यों नहीं जाता? क्यों नहीं छोटी बहन मुर्गी, बतख, कबूतरी की हत्या रोकने के लिए वे लोग प्रयास करते हैं? इन सबका क्या कसूर है कि ये बेमौत मारे जा रहे हैं। कन्या भ्रूण-हत्या रोकने के लिए सामाजिक एवं धार्मिक संस्थाएँ आन्दोलन करती हैं लेकिन हर चौराहे, बाजार में मुर्गी, बतख, कछुए के अण्डे की भ्रूण-हत्या हो रही है, इस तरफ किसी का ध्यान क्यों नहीं जा रहा है?

आदिवासी अर्थात् आदिकालीन देवी-देवता

अब मैं नियमित रूप से मुरली क्लास में जाता हूँ और बाबा का अनमोल ज्ञान प्राप्त कर रहा हूँ। मुझे कोई तनाव नहीं है और बी.पी. और शुगर भी कन्ट्रोल हो गये हैं। अब मैं सही अर्थ में आदिवासी (आदिकालीन देवी-देवताओं जैसा सम्पूर्ण अहिंसक) बनने की राह में हूँ। सभी भाई-बहनों से मेरा नम्र निवेदन है कि अपने शहर में नजदीकी ब्रह्माकुमारी सेवाकेन्द्र पर अवश्य जाएँ क्योंकि समय निकलता जा रहा है। वहाँ पर अनादि पिता (शिवबाबा) से आदि पिता (ब्रह्माबाबा) द्वारा इस कल्प के अन्तवासी (शूद्र) से नए कल्प के आदिवासी (देवी-देवता) बनने का परम सौभाग्य प्राप्त किया जा सकता है।

अच्छा समझें, इस इच्छा का त्याग कर निरन्तर अच्छे-से-अच्छा बनने की चेष्टा करें

प्रभु ने किये सब अरमान पूरे

ब्रह्माकुमारी राजकुमारी, कांदिवली (प.) मुम्बई

मुझे 19 वर्ष की युवावस्था में जब ईश्वरीय ज्ञान (कठुआ, जम्मू-कश्मीर में) मिला तो मेरी खुशी का पारावार ही नहीं था क्योंकि मुझे ऐसे जीवन की चाहत बचपन से ही थी। लौकिक में चचेरे भाई-बहनों सहित हम 9 भाई-बहनें हैं पर इतने बड़े संगठन के बीच रहते भी सदा एकान्त में रहने की मेरी इच्छा बनी रहती थी। समाज की मान्यता के अनुसार तो पुरुष ही घरबार त्याग कर, संन्यास धारण कर तपस्वी बन सकता है, स्त्री को यह अधिकार नहीं परन्तु मुझे तो संन्यासी की तरह तपस्वी जीवन ही पसन्द था। मैं स्कूल में नौकरी करती थी और चाहती थी कि शादी न करके माता-पिता के साथ रहूँ और ऐसे ही टीचर की नौकरी करते हुए अपना जीवन यापन करूँ। जब यह विचार मैं अपनी लौकिक माता जी के सामने रखती थी तो वे कहती थी कि एक राजा भी, जिसके पास पालना करने के लिए किसी भी चीज की कमी नहीं होती, बेटी को जीवन भर अपने पास नहीं रखता। बेटी तो 'पराया धन' होती है।

एक बार मेरे एक चचेरे भाई मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम पर ज्ञान सुनने के लिए लेकर गए। वहाँ सेवाकेन्द्र का शान्त वातावरण और निमित्त बहन जी के मर्यादित सफेद वस्त्र बहुत प्रभावित करने वाले लगे। फिर बहन जी के द्वारा ज्ञान सुना। सुनते-सुनते ऐसा लगा जैसे कि मैं किसी अलौकिक दुनिया में पहुँच गई हूँ। मैं रोज ही ज्ञान सुनने लगी और कुछ महीनों में ही सेवाकेन्द्र पर रहने भी लगी। वहाँ ईश्वरीय सेवा भी करती थी और स्कूल में पढ़ाने भी जाती थी।

सत्य बनाता है निर्भय

लौकिक परिवार में मेरी लौकिक माताजी को छोड़कर अन्य सदस्यों को मेरा ब्रह्माकुमारी बनना बिल्कुल ही स्वीकार्य नहीं था। आरंभ में मेरे सामने कई परीक्षाएँ तथा रुकावटें आयीं। अति विरोध का सामना करना पड़ा परन्तु जिसको सर्वशक्तिवान परमात्मा का साथ मिला हो, जो एक बल, एक भरोसे पर चलता हो उसे तो बड़े से बड़ा तूफान भी नहीं रोक सकता। मेरे एक मामा, ईश्वरीय ज्ञान को न समझने के कारण मेरे बहुत ही खिलाफ थे। एक दिन मैं घर गई थी, मैंने ब्रह्माकुमारी की ड्रेस पहनी थी। घर से वापिस सेवाकेन्द्र जाने के लिए निकली तब रास्ते में मामा और मामी मिले। वे हमारे घर जा रहे थे। मामा ने मुझे सिर से पैर तक देखा। मैं तो निर्भय थी। सत्य निर्भय बनाता है। वे कुछ भी नहीं बोले। मैंने सोचा, नाराजगी के कारण शायद कुछ नहीं कहा।

नफरत हुई शान्त

जब वे घर पहुँचे तो माँ उन्हें देखते ही घबरा गई। उन्हें अंदाजा आया कि जरूर बेटी को ये रास्ते में मिले होंगे और पता नहीं क्या हुआ होगा...। माँ के पूछने पर मामा ने जवाब दिया, 'हाँ, हमें रास्ते में मिली, मैंने तो बहुत कुछ सोचा था कि जब मिलेगी तो मैं हाथ भी उठा सकता हूँ पर हाथ उठाना तो दूर, मेरे मुख से आवाज तक नहीं निकली, मैं कुछ बोल भी नहीं पाया।' सचमुच यह परमात्मा की शक्ति की ही कमाल थी जो उनकी नफरत की वृत्ति को शान्त कर दिया।

प्रश्नों की परेशानी हो गई खत्म

नदी की धार के साथ-साथ तैरना तो आसान है परन्तु उस धारा को छोड़कर किनारे तक आने के लिए परिश्रम करना पड़ता है। इसी प्रकार, समाज के बने रीति-रिवाज से हटकर कुछ करना हो तो परीक्षा अवश्य आती है। मुझे भी पूर्ण रूप से ईश्वरीय सेवा में समर्पित होने से पहले परिवार

के सभी सदस्यों से छुट्टी लेने अर्थ घर में बुलाया गया। उन्हों के मन में समर्पित जीवन से सम्बन्धित कई प्रश्न थे। जब मैंने अपनी बात सबके सामने रखी तो सभी पूछने लगे कि यह सब क्यों करना है, यह कैसा ज्ञान वहाँ सिखाया जाता है? मैंने ज्ञान की पथप्रदर्शनी की पुस्तक के सारे चित्र उन्हें समझाये। कथा-कहानियों में सुना था कि आवश्यकता के समय, जो काम बंदों को करना होता है, खुदा खुद ही कर लेता है। मेरे साथ भी ऐसा ही हुआ। प्रदर्शनी समझाते हुए मैं अंतिम चित्र तक कैसे पहुँची, मुझे भी पता नहीं चला। ऐसा लगा जैसे मेरे बदले, मेरे बाबा ने ही यह काम कर दिया हो। इसके परिणामस्वरूप, सबके अंदर जो प्रश्नों की परेशानी थी, बिल्कुल ही समाप्त हो गई और ईश्वरीय ज्ञान सुनने की जिज्ञासा बढ़ गई। मैंने पिताश्री ब्रह्मा बाबा की जीवन कहानी भी सुनाई, सभी बिलकुल शान्त हो गए। मैंने अनुभव किया कि इस परीक्षा का उत्तर मैंने नहीं पर स्वयं प्रभु पिता ने लिखा। फिर मैं बन्धन से निर्बन्धन हो गई, विश्वकल्याण की सेवा में कोई बाधा नहीं रही।

बदल गई पिताजी की भावना

लौकिक पिताजी की सहमति तो मिल गई परन्तु फिर भी उनके मन में मेरे प्रति नाराजगी थी जो एक अनुभव से दूर हुई। एक बार उन्हें स्वप्न आया कि वे एक घने जंगल में बिल्कुल अकेले हैं और कुछ लुटेरों से घिरे हुए हैं और उनसे बचने के लिए भगवान से प्रार्थना करते हुए चारों ओर किसी की मदद के लिए देख रहे हैं। तभी अचानक उन्होंने मुझे एक फरिश्ते के रूप में आते देखा और उसी वक्त लुटेरों का ध्यान भी मेरी ओर गया तथा वे तत्काल उन्हें छोड़कर भाग गये। उस स्वप्न के बाद उनकी भावना मेरे प्रति बहुत ऊँची हो गयी कि ये हमारे घर में जन्मी कोई साधारण कन्या नहीं, एक देवी हैं, हमारी रक्षक भी हैं और उनकी नाराजगी पूरी तरह खत्म हो गई।

इस प्रकार परमात्मा पिता ने मेरी सर्व कामनायें पूर्ण कर दीं जो कोई मनुष्य कभी नहीं कर सकता। ❖

सोने का देश बना दें

ब्रह्माकुमार मदन वर्मा 'फलक'
हनुमानगढ़ी, छिवरामऊ (उ.प्र.)

आओ फिर से भारत को सोने का देश बना दें।
ओमशान्ति का मतलब सबको, आओ हम समझा दें।।

अरसे से मुरझाये सुमनों को फिर से खिल जाने दो।
विरह गीत गाने वालों को, मिलन गीत गा लेने दो।।
आज कोई तो सूखे अधरों तक सागर लाया है।
जगा देर से माझी भी, अपनी गागर लाया है।।
ऐसे प्यासे माझी को, ज्ञानामृत का पान करा दें।
आओ फिर से भारत को----------

तूफाँ में घासों के झुरमुट, नम जाया करते हैं।
अडिग रहे तरू टूट मध्य से, गिर जाया करते हैं।।
संकल्पों के दीप जलाओ, कोहरे छँट जायेंगे।
सच मानो तो अन्धकार के, सब बादल फट जायेंगे।।
जन-जन कोआओ फिर से पावनता का पाठ पढ़ा दें।
आओ फिर से भारत को----------------

बीते अंधियारों में अब हम लौट नहीं सकते हैं।
जो आगे बढ़, मुड़कर देखें, वो क्या कर सकते हैं।।
जिसका चलना काम रहा हो, वो क्या कभी थका है?
जबसे दुनिया तबसे देखो, दिनकर कभी रुका है?
ऐसे उन्मादी में फिर से, सोया पुरुषार्थ जगा दें।
आओ फिर से भारत को------------

लेखकों से निवेदन

जीवन-अनुभव के लेखों को निमित्त शिक्षिका के हस्ताक्षर के साथ भेजें। लेख, फोटो और कवितायें पोस्ट द्वारा या ई-मेल gyanamritpatrika@bkivv.org पर भेजें। अपनी रचना के साथ अपना पूरा पता, फोन नंबर, ई-मेल, संबंधित सेवाकेन्द्र का नाम, जोन तथा टीचर का नाम भी अवश्य लिखें। जो भी रचना भेजें, उसकी एक कॉपी अपने पास अवश्य रखें।

दिसम्बर अंक से आगे...

त्याग व सेवा की मूरत माता

ब्रह्माकुमार नरेश, मुजफ्फरनगर

माता जीजाबाई, मदालसा और ध्रुव की माता सुनीति से आज की माताएँ प्रेरणा ले सकती हैं। श्रीमद्भगवद् पुराण के अनुसार, तीन वर्षीय पुत्र ध्रुव जब अपने पिता की गोद में बैठना चाहता था तो सौतेली माँ सुरुचि ने उसे दुत्कार दिया। बच्चे ने जब यह घटना अपनी माँ सुनीति को बताई तो उसने अपने पुत्र को प्रतिशोध का मार्ग नहीं दिखलाया बल्कि परमात्म प्राप्ति की ओर प्रेरित किया। उसने ध्रुव से कहा, पुत्र, तू सांसारिक पिता की गोद का मोह त्याग और परमपिता की आनन्दमय गोद प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर। वर्तमान में ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ सांसारिक पिता के मोह से मुक्त हो कर परमपिता शिव की आनन्दमय गोद में मुक्ति-जीवनमुक्ति पाने का पुरुषार्थ कर रहे हैं।

लोरी में वैदिक ऋचाएँ

वैदिककालीन माता मदालसा ने अपनी सभी संतानों को लोरियों के रूप में वैदिक ऋचाएं गाकर सुनायी थीं। वह गाती थी, शुद्धोसि, बुद्धोसि, निरंजनोसि, संसारमाया परिवर्जितोसि अर्थात् मेरे पुत्र, तू शुद्ध है! बुद्ध है! संसार की माया से निर्लिप्त है। ऐसी महान पालना से उसकी सभी संतानों ने महान संस्कार धारण कर अनुकरणीय कर्म किये।

जिस माता का संगीत से कभी कोई नाता नहीं रहा, उसके मुख से भी शिशु को सुलाने के लिए मीठी लोरी स्वत: निकलती है और जिस शिशु का पिछले जन्म में संगीत के प्रति कोई लगाव नहीं रहा, वह भी माँ के इस संगीत से सुख पाता है। असल में लोरी शान्ति के गुण का शाब्दिक रूपान्तरण है और शान्ति हर एक आत्मा का स्वधर्म है।

व्यसनों का कुप्रभाव

भारत में व्यसनों में फंसे लोगों में 90 प्रतिशत पुरुष हैं और 10 प्रतिशत नारियाँ हैं। व्यसन करने वाले अकाल-मृत्यु को प्राप्त होते हैं जिससे बड़ी संख्या में विधवा-माताएँ त्रासदी से गुजर रही हैं। ऐसे व्यसनी-परिवार में पुत्रों को भी व्यसनी संस्कार सौगात में मिलते हैं और वे भी अपनी माँ के सामने अकाले मृत्यु को प्राप्त होते हैं। एक माता के लिए इससे ज्यादा दुखद और क्या हो सकता है कि उसकी आँखों के सामने पति व पुत्र नशे की भेंट चढ़ जायें और वह कोशिश करके भी उन्हें बचा न सके। जमीन-जायदाद भी व्यसनों में स्वाहा हो चुकी होती है और माताओं को विधवा-आश्रम में त्रासदी झेलनी पड़ती है। अमृतसर जिले के 25000 आबादी वाले मकबूलपुरा में व्यसनों के कारण एक भी पुरुष जिन्दा नहीं बचा है। हरिद्वार जिले के अधिकतर गाँवों में शराब का सेवन एक विकराल समस्या बना हुआ है जिससे पुरुषहीन घरों की संख्या बढ़ रही है और विधवा माताएँ त्रासदी से गुजर रही हैं। हरिद्वार में पूरे भारत के मुरदों का अस्थि-विसर्जन होता रहे और इस धार्मिक जिले के जिन्दों के व्यसनों का विसर्जन हो न पाए, तो वहाँ कौन-सा धर्म काम कर रहा है?

भगवान को बाँधने की कला

परमपिता परमात्मा शिव ने माताओं को रहमदिल का गुणी बतलाया है। रहमदिल, सेवा के बिना रह नहीं सकते इसलिए माताओं को कल्याणी भी कहते हैं। बाबा कहते हैं

कि 'जगतमाता बन जगत के लिए सोचो। बेहद के बच्चों के लिए सोचो। सिर्फ घर में नहीं बैठ जाओ।' बाबा ने यह भी कहा है कि 'माताओं को देह से संबंध का मोह कमजोर करता है। थोड़ा-थोड़ा बाल-बच्चों में, पोत्रे-धोत्रे में मोह होता है। मातायें सारे विश्व के सामने अपना निर्मोही रूप दिखाओ। लोग तो समझते हैं कि यह असंभव है और आप कहते हो कि संभव भी है और बहुत सहज भी है। लक्ष्य रखो तो लक्षण जरूर आयेंगे। जैसी स्मृति वैसी स्थिति हो जायेगी।' कथा है कि यशोदा जब श्रीकृष्ण को पेड़ से बांधने के लिए स्थूल रस्सी लाई तो वह छोटी पड़ गई। पत्नी यशोधरा भी सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध) को गृहस्थी की रस्सी से न बांध पाई परन्तु स्नेह की सूक्ष्म रस्सी से बिना शरीर वाले शिव भगवान को बांधने की कला तो कोई इन पढ़ी-बेपढ़ी ब्रह्माकुमारी माताओं से सीखे!

दुर्गा के 10 हाथ और रावण के 10 सिर

कलियुग के अन्त में जब मनुष्यों के आत्मिक गुण लुप्त हो गये हैं, तब स्वयं शिव बाबा माताओं को आगे कर नई सृष्टि की स्थापना का कार्य कर रहे हैं। निमित हैं ब्रह्माबाबा, जो फिर माताओं को आगे रख कर अपना कार्य करते हैं। यह एक ईश्वरीय योजना है जिसके तहत ब्रह्मा के द्वारा माताओं को मानव मात्र के कल्याण की जिम्मेवारी सौंपी गई। ब्रह्मा बाबा ने अक्टूबर, 1937 में माताओं की कमेटी बना कर अपनी स्थूल सम्पत्ति विल कर दी और 18 जनवरी, 1969 को अपनी सूक्ष्म सम्पत्तियाँ, दादी प्रकाशमणी के माध्यम से ईश्वरीय कार्य में अर्पण कर दीं। दैहिक बंधनों से मुक्त फरिश्ता बने ब्रह्मा ने अपनी सेवाओं को बहुआयामी बना लिया। तत्पश्चात् रावण-राज्य को राम-राज्य में बदलने का बेहद का कार्य जोर-शोर से शुरू हुआ, जो देखते ही देखते सारे विश्व में फैल गया। यदि रावण के 10 सिर नर-नारी के 5-5 विकार हैं, तो दुर्गा माता (चन्द्रघण्टा) के 10 हाथ नर-नारी के इन 5-5 विकारों का मर्दन करने के लिए ही तो हैं। रावण 10 शीश से सुख-शान्ति नष्ट करता है जबकि मां-दुर्गा 10 हाथों से बुराइयां मिटाने का कर्म करती हैं। ब्रह्माकुमारी बहनों व माताओं द्वारा सूक्ष्म में दुर्गा माता वाली भूमिका निभाई जा रही है। वे लौकिक परिवार के प्रति अपनी जिम्मेवारियां निभाती रहती हैं, तो ईश्वरीय विश्व-परिवार की सुख-शान्ति हेतु नि:स्वार्थ सेवा भी करती रहती हैं।

माता-आलराउण्ड सेवाधारी

ब्रह्माकुमारी आश्रम में जब कोई नया व्यक्ति आता है तो बाद में अक्सर वह इस अनुभव को साझा करता है कि आश्रमवासियों से उसे जैसा अद्‌भुत स्नेह और नि:स्वार्थ अपनापन प्राप्त हुआ वैसा उसे सांसारिक सम्बन्ध-सम्पर्क में रहते नहीं मिला था। ब्रह्माकुमारियों के द्वारा की जा रही सेवा उन्हें विश्व की माता या जगतजननी के समतुल्य करती है। सेवारत् ब्रह्माकुमार भाइयों के द्वारा माताओं जैसे गुण उजागर करना इस बात की पुष्टि करता है कि माता का दर्जा नर व नारी के दायरे से कहीं ऊँचा है और जो भी ईश्वरीय कार्य में सहयोगी बनता है, उसे माता जैसे गुणों का तोहफा ईश्वर देता है। माता अर्थात् ऑलराउण्ड सेवाधारी।

माँ केवल एक

जीवन में कोई चीज अकेली प्राप्त नहीं होती। भाई हो या बहन, एक से ज्यादा मिल जाते हैं, रिश्ते में चाची, ताऊ, मौसी या मित्र एक से ज्यादा मिल जाते हैं परन्तु माँ केवल एक ही मिलती है जिसकी जगह अन्य कोई नहीं ले सकता। उसी प्रकार जीवन में अनेक ईष्टदेव, अनेक देवी-देवताएँ व अनेक गुरु मिल जाएंगे परन्तु संस्कारों का रचयिता ब्रह्मा तो एक ही है जो पूरे कल्प में बस एक बार ही मिल सकता है। जिस प्रकार त्यागमूर्त माता मान-सम्मान मिले या न मिले, परिवार की सेवा करती रहती है उसी प्रकार ब्रह्मा, देवता रूप में न पूजे जाने पर भी मनुष्यों में दिव्य गुणों की रचना करने का दिव्य कार्य संगमयुग में करते रहते हैं। फलस्वरूप, सतयुग में पहले नंबर के देवता (श्रीकृष्ण) का पद पा लेते हैं।

ब्रह्मा माँ द्वारा संस्कारों की रचना

शिशु का मन एक कोरे कागज की तरह होता है जिस पर उसके माता-पिता जैसे चाहें वैसे चित्र बना सकते हैं। ऐसे अनेक चित्र मिल कर चरित्र का निर्माण करते हैं। माता-पिता की वार्ता, आपसी संबंध, खान-पान का स्तर, जीवन के प्रति उनका दृष्टिकोण आदि से शिशु के कोमल मन पर मानो ऐसी पगडंडी बन जाती है, जिस पर चल कर वह भावी जीवन का आचार, विचार, व्यवहार, कर्म आदि निर्धारित करता है। जन्म-दर-जन्म गिरावट में आकर आज मनुष्यों का व्यक्तित्व व चरित्र कलुषित हो गया है। ऐसे में वे अपने बच्चों को कैसी पालना देंगे, यह समझा जा सकता है। गंदे ब्रश से दीवारों पर सफेदी नहीं की जाती और सब्जी वाली कड़छी से खीर नहीं परोसी जाती। अत: गंदे हो चुके मन को मनमनाभव: के मंत्र से स्वच्छ करने पर ही उसमें श्रेष्ठ संकल्पों की उत्पत्ति हो सकती है। कलियुग के इस अन्तिम प्रहर में परमपिता शिव, ब्रह्मा-माता के द्वारा मनुष्यात्माओं में सतयुगी संस्कारों की विशेष रचना रच रहे हैं परन्तु लाभ तब मिले जब बाल-सुलभ मनोवृत्ति से इस माँ का दामन थामा जाये।

स्वयं के मूर्तिकार स्वयं बनें

अभी हर वह मनुष्यात्मा, जिसने ब्रह्मा के द्वारा उच्चारित ईश्वरीय ज्ञान को प्राप्त कर पुराने शरीर में रहते नया जन्म लिया है, अपनी रचयिता स्वयं बन रही है। स्वयं के पुरुषार्थ से अपने भविष्य के देवताई स्वरूप को गढ़ रही है। वह अभी रचनाकार भी है तो भविष्य की रचना भी है। वह वर्तमान में माँ समान बन, भविष्य में उत्पन्न होने वाले स्वयं के देवी-देवता स्वरूप को गढ़ रही है। उसे पूरी छूट है कि अपने भविष्य स्वरूप को जितना श्रेष्ठ बना सके, बना ले। वह अभी ऐसी मूर्तिकार है जो अपने 63 जन्मों के सख्त संस्कारों की शिलाखंड पर पुरुषार्थ की छेनी-हथौड़ी चला कर अपने देवताई स्वरूप को प्रत्यक्ष कर रही है। आइये अपने-अपने शिलाखंड (संस्कार) को ईश्वरीय ज्ञान-योग की शक्ति से तराशें, अपने सतयुगी स्वरूप की वर्तमान में माँ बनें।

समाप्त

पृष्ठ 25 का शेष

डाला जाता है तो वे तुरंत उससे घृणा कर बाहर निकाल देते हैं। कारण? उनमें स्वाद की जड़ें विकसित नहीं होतीं।

लहसुन-प्याज में मिश्रित तीव्र उड़ने वाले तेल या रासायनिक पदार्थ एलिसिन और मस्टर्ड ऑयल जोकि शरीर के पाचनतंत्र और उत्सर्जन तंत्र की ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित कर, मन का ध्यान शरीर के जननेन्द्रिय भागों की ओर खिंचवाते हैं जिनसे मन में मलिन विचार उठते हैं।

क्या इन्हें औषधि रूप में लेना चाहिए?

जब कोई वस्तु औषधि के रूप में ली जाती है तो उसकी मात्रा निश्चित और बहुत सीमित होती है। औषधि रूप में अन्य कई पदार्थों के साथ मिश्रित होने पर उसके गुण-धर्म के प्रभाव में अन्तर भी आ जाता है। जैसे खांसी की दवा में कुछ प्रतिशत अल्कोहल मिश्रित होने पर भी उसे हम प्रयोग में लाते हैं। यदि वैसे अल्कोहल पीने की बात आए तो सभी विरोध करेंगे क्योंकि वह हानिकारक है परन्तु दवा में मिश्रित उसकी अल्प मात्रा रोग-मुक्तिकारक है। इसी प्रकार गठिया, वाई, बादी आदि रोगों के निवारण के लिए कई देशी दवाओं में लहसुन का प्रयोग किया जाता है। उसमें लहसुन की बहुत सीमित मात्रा होती है और दिन में निश्चित किए समय पर, निश्चित मात्रा में वो दवा लेनी होती है परन्तु जब व्यक्ति स्वादवश कोई चीज खाता है तो वह जब चाहे, जैसे चाहे, जितनी चाहे खाता है। अत: दवा के रूप में खाने में और स्वाद के वश खाने में बहुत अन्तर है। दवा रूप में ली जाने वाली चीज, तन्दुरुस्त होने के बाद छोड़ दी जाती है लेकिन स्वादवश खाई जाने वाली चीज का कोई अन्त नहीं है। देशी दवा के लिए इनके अलावा अन्य पदार्थ भी उपलब्ध हो सकते हैं।

ऊपर कहा गया है, इनके कुप्रभाव, इनके फायदों से ज्यादा हैं। फिर भी अति आवश्यक होने पर दवा रूप में वैसे ही प्रयोग कर सकते हैं जैसे अल्कोहल का प्रयोग खांसी की दवा में होता है। ❖

एक अनोखा मूर्तिकार – शक्ति निकेतन (इन्दौर)

ब्रह्माकुमार राजनारायण, बनारस (उ.प्र.)

यूँ तो आप अनेक मूर्तिकारों के बारे में जानते होंगे परन्तु हम ऐसे मूर्तिकार के विषय में चर्चा करना चाहते हैं, जो विश्व में एक अजूबा है। जिसका कारोबार पदमों में भी आँका नहीं जा सकता। वास्तव में यह मूर्तिकार कोई मिट्टी, पत्थर या संगमरमर की मूर्तियाँ नहीं गढ़ता। सोने-चाँदी की भी नहीं, यह तो साक्षात् चैतन्य देवियों की मूर्तियाँ सृजित करता है। किसी भी देश-क्षेत्र की कच्ची मिट्टी लाइये और चन्द महीनों-वर्षों में सुन्दर, चमकती, चैतन्य मूर्ति पाइये।

कौन है वो मूर्तिकार?

अब हम उस मूर्तिकार का नाम व पता जानेंगे। मालवा की पावन तपस्थली पर बसा है मध्यप्रदेश का समृद्ध नगर इन्दौर। इस नगर के छोटे-से स्थान न्यू पलासिया में प्रसिद्ध आध्यात्मिक स्थल है ''ओमशान्ति भवन'' । इस ओमशान्ति भवन के पावन प्राँगण में महकता, चहकता कन्या छात्रावास है ''शक्ति निकेतन'' जिसकी नींव साकार बाबा के दिशा-निर्देश पर परम ओजस्वी-तेजस्वी भ्राता ओमप्रकाश ''भाई जी'' के भागीरथ प्रयास से तथा अन्य अनेक ब्राह्मण कुलभूषण भाग्यशाली भाई-बहनों के सहयोग से सन् 1983 में पड़ी। तब से लेकर आज तक सलिल-सरिता सम यात्रा तय करते हुए अथक-अनवरत यह अनोखा 'शिल्पी' उत्तरोत्तर तरोताजा रहते हुए अपनी चरम कृति को अंजाम देता ही जा रहा है। इस अनोखे ''शक्ति निकेतन'' ने अब तक अनेक चैतन्य मूर्तियाँ, शिव बाबा की राइटहैण्ड टीचर, परम पवित्र बाल-ब्रह्मचारिणी ब्रह्माकुमारी बहनें, दुनिया और भारत की भाग्यविधात्री के रूप में भेंट की हैं।

इस छात्रावास को अनोखा मूर्तिकार क्यों कहें?

''शक्ति निकेतन'' उर्फ कन्या छात्रावास की चन्द विशेषताएँ संक्षेप में उद्धृत करने के उपरान्त यह स्पष्ट हो जाता है कि इसे अनोखा मूर्तिकार अथवा अखिल भुवन में इकलौता छात्रावास क्यों कहा जाता है? इसे चन्द लाइनों में सिलसिलेवार जानेंगे –

1. लौकिक (दुनियावी) शिक्षा एवं अलौकिक (आध्यात्मिक) शिक्षा का अनूठा युगलबन्ध (सम्मिश्रण) एकमात्र इसी छात्रावास में सहज उपलब्ध है।

2. सृष्टि-मंच पर सर्वोच्च आध्यात्मिक केन्द्र 'मधुबन' अर्थात् ब्रह्माकुमारीज़ के अन्तर्राष्ट्रीय मुख्यालय की समूची क्रिया-पद्धति का पालन करने में प्रयासरत एक मात्र छात्रावास है ''शक्ति निकेतन''।

3. किसी भी देश, प्रान्त, शहर, गाँव अथवा किसी भी भाषा को जानने वाली कन्या का सहज दाखिला (प्रवेश) होता है।

4. कुमारियाँ खेल-खेल में ऋषि-महर्षियों जैसी जीवन-पद्धति को धारण करते हुए पवित्रता की पराकाष्ठा का ज्वलंत उदाहरण पेश कर संत-महात्माओं को चकित करने वाली चैतन्य देवियाँ बन जाती हैं।

5. छात्रावास का विशुद्ध सात्त्विक आहार-विहार, आपसी स्नेह-प्यार अत्यन्त मनोहारी प्रतीत होता है।

6. कन्याओं के चहुँमुखी विकास को निखारने के लिए हर संभव प्रयास करता है ''शक्ति निकेतन''। इसके लिए विभिन्न प्रकार से सांस्कृतिक कार्यक्रमों का संपादन किया जाता है।

7. कन्या की उत्कृष्ट एवं पवित्र पालना जो ''शक्ति निकेतन'' प्रदान करता है, ऐसी चारित्रिक पालना अन्य छात्रावासों में मुश्किल है।

8. ''शक्ति निकेतन'' की कुमारियाँ वर्ष में एक बार 'मधुबन' महातीर्थ में अवश्य जाती हैं। मधुबन में दादियों का दुलार एवं समस्त मधुबन निवासियों का सहृदय सहयोग

ही इनकी खुशी की खुराक बन जाती है।

9. दिव्य-जीवन कन्या छात्रावास (शक्ति निकेतन) का परीक्षा परिणाम 100 प्रतिशत रहता है। कुमारियों की दिव्यता, इनके रूहानी एवं अनुशासित व्यवहार के कारण ही स्कूल, कॉलेज वाले भी इनके लिए पहले से प्रवेश आरक्षित रखते हैं। भाषण-कला, नाट्य-कला, नृत्य-कला आदि विधाओं में ''शक्ति निकेतन'' की कुमारियाँ अव्वल रहती हैं।

10. भारतीय संस्कृति का सनातन स्लोगन 'अतिथि देवो भव:' की विरासत को कुमारियों ने कैसे जीवन्त रखा है, आप स्वयं ही देखकर आत्म-विभोर हो जायेंगे।

11. खान-पान के समस्त भारतीय व्यंजन बनाने में छात्रावास सिद्धहस्त है। बाहर की किसी भी प्रकार की खाद्य-सामग्री छात्रावास में वर्जित है।

12. ''शक्ति निकेतन'' की संस्कृति, ब्रह्म-मुहूर्त में उठने की तो है ही, साथ ही प्रात: 8 बजे तक ईश्वरीय याद में मौन की स्थिति में सभी रहते हैं तथा सोमवार के दिन मौन दिवस के रूप में मनाया जाता है, जिसमें अधिकांश कन्याएँ मौन रहती हैं।

13. कन्या छठी कक्षा से लेकर ग्रेजुएशन तक जब चाहे प्रवेश ले और जब चाहे जा सकती है।

14. समय-समय पर कन्याओं को वरिष्ठ दीदियों के द्वारा मर्यादित मनोरंजन व पिकनिक कराई जाती है।

अति संक्षिप्त शब्दों में लेखक ने अपना बाह्य अनुभव व्यक्त करने का प्रयास किया है। आन्तरिक अन्य गतिविधियाँ आप स्वयं आकर जान सकते हैं। प्रवेश आदि की जानकारी भी आप पत्राचार अथवा फोन द्वारा या स्वयं यहाँ पधार कर प्राप्त कर सकते हैं। आपका अपना ही शक्ति निकेतन है। आपके लिए बनाया हुआ यह शिव बाबा की अनमोल धरोहर है।

कन्याओं के प्रवेश का सत्र जनवरी से मई तक खुला रहता है। इससे सम्बन्धित अधिक जानकारी के लिए इस पते पर सम्पर्क कर सकते हैं –

बी.के करुणा
ओमशान्ति भवन, ज्ञान शिखर, गेट नम्बर 2
33/4, न्यू पलासिया, इन्दौर (म.प्र.) – 452001
Mo. : 9425316843, 9425903328
Landline No. : 0731-2531631
E-mail : shaktiniketan@gmail.com

❖

पृष्ठ 4 का शेष

पुन: 'वर' पाने का सुअवसर

यहाँ प्रश्न उठाया जा सकता है कि क्या पाश्चात्य देशों के लोगों को सद्‌बुद्धि, सुचरित्रता अथवा ईश्वरीय ज्ञान एवं योग प्राप्त है कि वे समृद्धशाली एवं सम्पन्न हैं? इसका उत्तर यह है कि सात्विक बुद्धि तो उन्हें भी प्राप्त नहीं है परन्तु उनमें कर्म-परायणता, क्रियाशीलता, एकता अथवा संगठन, स्वच्छता, व्यवस्था, शासन-क्षमता, शोध एवं अविष्कार-प्रियता इत्यादि गुण हैं जबकि भारत में ये तथा अन्य ऐसे गुण भी नहीं हैं जो मनुष्य को आर्थिक प्रगति दें। पाश्चात्य देशों में भी जहाँ सद्‌गुणों की कमी है वहाँ उन्हें भी मन की अशान्ति है। अत: शिवरात्रि के शुभ अवसर पर हम तो विशेष तौर पर भारतवासियों का तथा सामान्यत: सारे संसार का ध्यान इस ओर आकर्षित कर रहे हैं कि अवढ़र दानी शिव बाबा हमें अब जो ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग का वरदान दे रहे हैं, वह प्राप्त करके हम श्रेष्ठता को प्राप्त करें। रंक से राव, कौडी-तुल्य से हीरे-तुल्य या नर से नारायण बनने की यही युक्ति है। सभी को मालूम रहे कि भारत को फिर से 'सोने का देश' बनाने वाले अमर वरदानी तो परमपिता परमात्मा शिव ही हैं; उनको भूलने से ही भारत का यह हाल हुआ है। आज भारत में शिव के लाखों मन्दिर हैं। करोड़ों पुजारी हैं परन्तु शिव जो 'वर' देते हैं, वह वर उन्हें प्राप्त नहीं है। अब शिवबाबा पुन: वह वर दे रहे हैं; यदि कोई चाहे तो वह ले। ❖

लहसुन-प्याज पर निषेध क्यों?

कई चिकित्सा पद्धतियाँ लहसुन-प्याज को बीमारियों के घरेलू इलाज में अच्छी औषधि मानती हैं। जैसे आँतों को कृमि रहित करने के लिए, उपापचय (Metabolism) क्रियाओं को सुधारने के लिए, धमनी रुधिर दबाव (B.P.) कम करने के लिए आदि। पर इनका कुप्रभाव इनके इलाज से ज्यादा है।

स्टेडमैन के शब्दकोष और कुछ चिकित्सकों द्वारा जीव रसायन विज्ञान पर आधारित अनुसंधानों से पता चला है कि लहसुन-प्याज के अंदर तीव्र उड़ने वाले एलिसिन और मस्टर्ड ऑयल नामक तेल होते हैं जिनके कारण इनके खाने से चिड़चिड़ापन, स्वाद में तीखापन और उपापचय क्रियाओं पर गुणकारी प्रभाव मालूम पड़ता है।

ये रसायन पदार्थ (लहसुन-प्याज के अंदर) इतने तीखे और उत्तेजक हैं कि इनको हलका ज़हर कहना ही उचित है। इनको खाने से कुछ ही क्षणों में बैक्टीरिया खत्म हो जाते हैं। यही नहीं, मनुष्य के समजीवी और लाभकारी बैक्टीरिया भी खत्म हो जाते हैं। पेट व आँतों की श्लेष्मा झिल्ली का स्राव इनकी उत्तेजकता से बहुत बढ़कर व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है। हमारा शरीर इसे जहरीला पदार्थ समझकर इसको निष्कासित करने की क्रिया करता है। इनके जहरीले-पन तथा कीटनाशक क्रिया को निम्न तथ्यों द्वारा भी जाना जा सकता है –

1. इनके पौधे को जब कीट प्रभावित सब्जियों जैसे टमाटर, आलू और गोभी के बीच लगाया जाता है तो वहाँ पर इनके कीटनाशक प्रभाव से उन सब्जियों को बचाया जा सकता है।

2. जब लहसुन को चमड़ी से रगड़ते हैं तो चमड़ी का रंग लाल हो जाता है। प्याज-लहसुन काटते वक्त यदि इनके जलकण, काटने वाले की आँखों में चले जाएँ तो उसकी आँखों से पानी बहने लगता है। क्योंकि शरीर की स्वाभाविक क्रिया है कि जब भी कोई जहरीला पदार्थ या उत्तेजक पदार्थ शरीर के किसी भी अंग से छूता है तो शरीर का रुधिर संचरण उस स्थान की तरफ बहुत बढ़ जाता है। इसी कारण चमड़ी का रंग लाल होता है, आँखों से पानी बहता है और मुख में लार बनने लगती है।

3. जब हम लहसुन-प्याज को खाते हैं तो एक घंटे के अंदर मुख द्वारा उसकी गंध आती है क्योंकि शरीर में इसके रसायन पदार्थों की, फेफड़ों या चमड़ी के द्वारा विसर्जन क्रिया होती है।

क्या इससे रुधिर दबाव और कोलेस्ट्रॉल कम होता है?

यह कहा जाता है कि लहसुन-प्याज लेने से रुधिर दबाव व कोलेस्ट्रॉल लोड कम हो जाता है। यह तो ठीक है कि लहसुन-प्याज का सेवन करने के बाद रुधिर का दबाव कम हो जाता है। वास्तव में ये लहसुन-प्याज के प्रभाव के कारण नहीं बल्कि ये तो शरीर की इसके प्रति प्रतिक्रिया व इन रसायन पदार्थों की उपापचय क्रियाओं द्वारा होता है। जैसे लहसुन-प्याज के शरीर के अंदर जाते ही शरीर की सारी रासायनिक क्रियाएँ इनको टॉक्सिन समझकर, इनकी विसर्जन क्रिया की तरफ एकाग्र हो जाती हैं और अन्य शारीरिक क्रियायें धीरे चलने लगती हैं जैसे कि दिल की धड़कन कम होना। इन रसायन पदार्थों का जिगर की कोशिकाओं पर बुरा असर पड़ता है जिससे वसा का उपापचय नहीं होता और कोलेस्ट्रॉल नहीं बनता है।

क्या इन्हें भोजन के जायकेदार स्वाद के लिए लेना अच्छा है?

भोजन का कड़क स्वाद और सुगंध इनमें पाये जाने वाले तेलीय रसायन पदार्थ मस्टर्ड ऑयल के कारण होता है। ये जीभ के ऊपर स्वाद की छोटी-छोटी ग्रंथियों को बहुत तेजी से चिढ़ाते हैं और ऐसा स्वाद पैदा करते हैं जैसे तंबाकू पीने वालों को निकोटिन नामक रासायनिक पदार्थ से मिलता है। इस तथ्य का प्रमाण इस उदाहरण से स्पष्ट मिलता है – अगर बहुत थोड़ा-सा लहसुन या प्याज बच्चों या बछड़े के मुँह में

शेष पृष्ठ 22 पर

संग्रह तो किया पर सदुपयोग नहीं

ब्रह्माकुमार रामसिंह, रेवाड़ी

आज का समाज धन के पीछे बावला हुआ समाज है। धन का सुख नहीं है पर धन की होड़ है। धन का सदुपयोग नहीं है पर संग्रह है। धन से पुण्य अर्जन नहीं वरन् पाप से अर्जन और पाप में ही विसर्जन है। धन के कारण होने वाले अपराधों की बाढ़ है। मनुष्य कहता है, पापी पेट सब करवाता है परन्तु पेट तो पाव आटे में भर जाता है, पेट के नाम पर इकट्ठा करने वाले पेट में डाल कहाँ पाते हैं? दाल का फीका पानी, फीका दलिया, उबली सब्जी, सूखी चपाती और दो गोलियाँ – इतना आहार भर रह जाता है। नींद आती नहीं है, धन के साथ-साथ शरीर में रोगों का भी संग्रह हो रहा है। एक के साथ एक मुफ्त चीज मिलने का जमाना जो है। फिर इस क्षणभंगुर जीवन में परलोक तक साथ न निभाने वाले नश्वर धन के ऊपर नींद, भूख, स्वास्थ्य, ईमान, शान्ति – सब कुछ वार देने का क्या औचित्य? किसी ने सत्य ही कहा है –

साईं इतना दीजिए, जा में कुटुम्ब समाए।
मैं भूखा ना रहूँ, साधू न भूखा जाए।।

श्रीमत प्रमाण लगने वाला धन ही अपना है

जो धन बैंकों में, पेटी में, जेब में पड़ा है वह अपना नहीं है। उसमें से जो ईश्वरीय श्रीमत प्रमाण, ईश्वरीय कार्य में लग जाए वही अपना है। संग्रह के रूप में पड़े धन में से क्या पता कितना जुर्माना भरने में, मुकदमे में, डॉक्टर की फीस में देना पड़े और कितना किसी चोर के हाथ लग जाए या अग्नि की भेंट चढ़ जाए। कितना व्यसनों में और कितना आडंबरों में जाये। जो खा लिया, वह भी सार्थक नहीं, उसमें भी जितना हजम हो जाये, वही सार्थक है। खाने के बाद जो गोलियों द्वारा बाहर निकालना पड़े, उस खाये हुए का क्या लाभ?

भोग का नहीं, योग का साधन बने धन

धन बुरा नहीं है, धन का दुरुपयोग बुरा है? अध्यात्म कहता है, धन को भोग का नहीं वरन् योग का साधन बनाइये। आपका धन, आपकी साधना को बढ़ाए। वह बुद्धि को दिव्य बनाने के निमित्त बने। श्रेष्ठ कर्मों के खाते को बढ़ाए। दुआ और पुण्य अर्जित कराए। धन का ईश्वरीय सेवा में इस तरह नियोजन हो कि एक तरफ संसार के लोगों का कल्याण हो, दूसरी तरफ आगे के जन्मों में हमारे सुख का रास्ता खुलता जाए।

पदार्थों का संग्रह है, पुण्यों का नहीं

लालच अपनी कीमत वसूलता है। अनावश्यक संग्रह लालच का ही प्रतिरूप है। यह नकारात्मक उपलब्धि है। वैभव की चकाचौंध में उलझने की भारी कीमत चुकानी पड़ती है। इसके लिए समय, श्रम और ऊर्जा तीनों का क्षरण होता है। ऐश्वर्य की चमचमाहट में मन रमने लगता है, पाने और भोगने को लालायित होता है, न पा सकने की स्थिति में अन्य जुगाड़ भिड़ाने लगता है। सब कुछ बटोरने को जी चाहता है। बटोरकर थोड़ी देर के लिए खुश होता है, घर ले जाकर थोड़ी देर उसकी चमक से चमकता है, औरों को दिखाकर इस चमक को बढ़ाना चाहता है। सुख भोग के नाम पर हमारे पास ढेर सारा संग्रह हो जाता है पर कुछ दिन बाद जब और अच्छी चीजें बाजार में आ जाती हैं तब मन उनकी ओर दौड़ने लगता है। सबसे अधिक पुण्य का आगार नष्ट होता है काम-वासना को भड़काने वाली बातों और पदार्थों से। इसके बाद जो चीजें अहंकार, ईर्ष्या, आलस्य को जन्म दें, वे भी पुण्यों का क्षय करती हैं। आज हमारे पास पदार्थों का संग्रह है, पुण्यों का नहीं। इसी का परिणाम है तन-मन-जन से उत्पन्न अनसुलझी समस्याएँ।

अपनी सम्पत्ति का भी त्याग के साथ उपभोग करें

जैसे मिलावट करने से सोना खोटा हो जाता है, उसी प्रकार बेईमानी, भ्रष्ट आचरण की मिलावट से व्यक्ति भी खोटा हो जाता है। खरा वही है जो अन्तरात्मा की आवाज पर ईमानदारी की कमाई से सन्तुष्ट है। किसी का छीन कर, झपट कर नहीं बल्कि अपनी सम्पत्ति का भी त्याग के साथ उपयोग कीजिए, किसी के धन को लालची दृष्टि से मत निहारिए। किसी को महल में रहने की इच्छा हो, यह बुरी बात

नहीं है परन्तु वह आज से ही महल खड़ा करने का कार्य आरम्भ कर दे, दूसरे के बने बनाये महल को लोभ की दृष्टि से न देखे। यदि समय रहते ईश्वरीय कार्य में धन खर्च हो गया तो मोहर बराबर, नहीं तो मिट्टी बराबर हो जाने वाला है। ❖

विज्ञान और अध्यात्म

ब्रह्माकुमार एस.सी.सुनील कुमार, बैंगलुरु

पिछले करीब चार-पाँच दशकों में विज्ञान की क्रांतिकारी प्रगति से सारा जगत चमत्कृत है। साधना के इस क्षेत्र को धरती तक सीमित न रखकर, मानव निरन्तर खोजों द्वारा अन्य ग्रहों पर भी अधिकार जमाने की कोशिश में है। नये-नये अविष्कारों पर निरंतर प्रयोग चलता ही रहता है।

जैसे-जैसे विज्ञान आगे बढ़ता जा रहा है, मनुष्य का सामाजिक जीवन सुखदाई होने लगा है। दूर सम्पर्क, यात्रायें आदि आसान और आरामदायक बन चुके हैं लेकिन विरोधाभास यह है कि जीवन की सुगमता और आधुनिकता के साथ मानवता और नैतिक मूल्य गिरते जा रहे हैं। आज मनुष्य में स्वार्थ, अहंभाव, अनैतिकता, लालच, आलस्य, दुर्व्यसन, हिंसा, ईर्ष्या-द्वेष जैसे विकारी गुण एक से बढ़कर एक नकारात्मक प्रभाव दिखा रहे हैं। विज्ञान के नये-नये आविष्कार मानव के आत्मविश्वास को बढ़ाने के साथ-साथ उसके अहंकार को भी बढ़ावा दे रहे हैं। वह इस अभिमान में है कि उसके बढ़ते सामर्थ्य को रोकने वाला कोई भी नहीं है।

जो भी हो, वैज्ञानिक शक्ति की भी एक सीमा है, इस सच्चाई को अति बुद्धिमान मनुष्य को जान लेना चाहिए। इसके कई प्रमाण हमारे पास हैं जैसे कि इमारत का निर्माण करने में विज्ञान भले माहिर है लेकिन भूकम्प के एक झटके से ही भारी इमारत मिट्टी में मिल जायेगी। भूकम्प का माप तो किया जा सकता है लेकिन उसे रोकने में विज्ञान असमर्थ है। ऐसे ही वर्षा होने पर विज्ञान द्वारा जाना जा सकता है कि कितने सेन्टीमीटर वर्षा हुई है। न होने पर यह भी जाना जा सकता है कि वर्षा की कितनी जरूरत है लेकिन विज्ञान द्वारा वर्षा को न तो रोका जा सकता है और न ही बरसाया जा सकता है। सौरमण्डल की जानकारी लेने में विज्ञान समर्थ है लेकिन ग्रहों के पथचलन को रोकना या बदलना उसके बस की बात नहीं है। बिजली के इस्तेमाल से तात्कालिक रोशनी पायी जा सकती है किन्तु सूरज की बराबरी नहीं की जा सकती। नित्य निरन्तर होने वाले दिन या रात के चक्र को भी रोक पाना नामुमकिन है। बाढ़, सूखा, ज्वालामुखी, तूफान, सुनामी जैसी प्राकृतिक आपदाओं को रोकने की क्षमता क्या विज्ञान में है?

विज्ञान का मतलब है, जो कुछ सृष्टि में है उसे परखना। सौर-शक्ति, तेल, अणु-शक्ति आदि प्रारम्भ से ही सृष्टि में समाये हुए हैं। वैज्ञानिक प्रगति के द्वारा इन्हें परखकर मनुष्य ने इन्हें अपने प्रयोग में लाया है। सृष्टिकर्त्ता की स्वाभाविक चीजों को उपयोग में लाते हुए मनुष्य, इन चीजों के निर्माण को अपनी योग्यता समझकर, अपनी हदों को भूल बैठा है। कई लोग तो यह भी कहते हैं कि प्रकृति ही भगवान है पर असल में प्रकृति परमात्मा की रचना है। सारी सृष्टि का रचयिता परमात्मा ही है। वैज्ञानिक आविष्कारों के बहाने से सारी सृष्टि को कलुषित करना मानव के दुस्साहस की अति है। अपने-अपने राष्ट्र को सशक्त बनाने के बहाने से विनाशकारी अस्त्र-शस्त्रों के निर्माण में ही आज बहुत सारे राष्ट्र अपने देश का बड़प्पन समझ बैठे हैं किन्तु ये सब सृष्टि के विनाश के ही साधन हैं। वैज्ञानिक, अपनी खोज का सदुपयोग करें तो प्रशंसनीय होगा लेकिन उसका दुरुपयोग तो विनाशकारी ही होगा।

इन विनाशकारी साधनों के दुरुपयोग पर यदि कोई अंकुश लगा सकती है तो वह है आध्यात्मिक शक्ति। अत: विज्ञान के द्वारा प्रकृति की खोजों के साथ-साथ मानव की भीतरी प्रकृति अर्थात् आत्मिक स्वभाव पर भी शोध जरूरी है। जब आन्तरिक प्रकृति शुद्ध और सशक्त बनेगी तो वह बाहरी खोजों को नियंत्रित कर उन्हें सही दिशा दे पाएगा। ❖

मोबाइल बनाम मनोबल

ब्रह्माकुमारी संध्या, अलवर (राजस्थान)

वैज्ञानिक चमत्कारों से भरे आज के युग में दो और ढाई साल के बच्चों को भी अपने छोटे-छोटे हाथों में बड़ा-बड़ा मोबाइल थामते, उसके गाने सुनते और दृश्य देखते हुए देखा जा सकता है परन्तु आश्चर्य की बात है कि आयु के बढ़ने और परिणामस्वरूप शरीर का आकार बढ़ने पर भी वे अपने सूक्ष्म मन को सम्भालने में असमर्थ ही रह जाते हैं।

आज यदि किसी घर में चार सदस्य हों और मोबाइल एक हो तो उस पर छीना-झपटी चल पड़ती है, हर कोई उस एक का मालिक बनना चाहता है परन्तु मन तो विधाता ने जन्मजात सबको अपना-अपना दे रखा है, क्या हम उसके मालिक बन पाए?

एक बार एक शिष्य ने अपने गुरुदेव से देवताओं को वश करने का मंत्र मांगा। गुरुदेव ने कहा, जरूर दे दूँगा परन्तु पहले बताइये कि 'क्या आपके घर के नौकर-चाकर आपके वश में हैं?' शिष्य ने कहा, 'वे सब कामचोर हैं, काम न करने का बहाना ढूंढ़ते रहते हैं।' 'क्या परिवार के सदस्य वश में हैं?' गुरु ने फिर पूछा, 'नहीं, सब स्वार्थी हैं।' 'तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे वश में है?' 'कहाँ है गुरुदेव! मैंने उसे कहा, एक सप्ताह बाद पीहर चली जाना परन्तु मेरे मना करने के बावजूद भी वह अपनी माँ से मिलने चली गई', शिष्य ने जवाब दिया। गुरुदेव ने फिर पूछा, 'चलो सबको जाने दो परन्तु तुम्हारा मन तो तुम्हारे वश में होगा ही?' शिष्य ने कहा, 'नहीं गुरुदेव! मन तो बड़ा चंचल है, स्थिर होता ही नहीं है।' गुरुदेव ने कहा, 'अरे भाई, जब परिवार, नौकर, पत्नी और यहाँ तक कि मन भी आपके वश में नहीं है तो देवता वश में कैसे होंगे? पहले मन को वश में कीजिए, फिर देवता भी नमन करेंगे।'

मन को वश करने के लिए चाहिए मनोबल या आत्मबल। जब आत्मबल होता है तो अप्राप्त भी प्राप्त हो जाता है और आत्महीनता के कारण प्राप्त हुआ भी पकड़ से छूट जाता है। आत्मबल आता है आत्मा और परमात्मा को यथार्थ रीति से जानने से और परमात्म मिलन मनाने से। इस विधि को राजयोग कहते हैं।

मानव मोबाइल की मुट्ठी में

आधुनिक मोबाइल में इन्टरनेट कनेक्शन के माध्यम से विश्व भर के दृश्य और जानकारियाँ उपलब्ध रहती हैं। ऐसे मोबाइल को हाथ में लेते ही मनुष्य को लगता है कि दुनिया मेरी मुट्ठी में आ गई है परंतु वास्तविकता यह है कि वह मोबाइल की मुट्ठी में आ जाता है। मोबाइल पर नजरें गड़ाए-गड़ाए उसकी नजरें कई आवश्यक कार्यों, कर्त्तव्यों और महत्त्वपूर्ण सम्बन्धों से हटने लगती हैं। शरीर, परिवार, समाज के प्रति नियोजित किए जाने वाले कई आवश्यक क्षणों को वह मोबाइल की भेंट चढ़ा देता है। मोबाइल की तरफ झुकाव और कर्त्तव्य से उठाव, यह प्रवृत्ति असन्तोष, कलह, अशान्ति, आत्मग्लानि, पश्चाताप, गलतफहमी आदि को जन्म देकर जीवन को जहरीला बनाती है।

प्रचार-प्रसार के इस युग में मोबाइल हमारी रोज की आवश्यकता तो बन गया है, उसके माध्यम से कई कार्य त्वरित गति से सरलतापूर्वक किए तो जा रहे हैं परन्तु इसे हम आवश्यकतापूर्ति तक ही सीमित रखें। आवश्यकता के बिना भी, महज आकर्षणवश इससे चिपके रहना, हममें भी संवेदनहीनता और जड़ता पैदा कर देता है।

स्मार्ट फोन नहीं, जीवन को स्मार्ट बनाते हैं सद्गुण

आज स्मार्ट फोन का आकर्षण हरेक को है परन्तु उसके गलत प्रयोग से गई बार मानव कुरूप और भद्दे हो जाते हैं। मानव को सुन्दर बनाने वाले हैं उसके सुन्दर कर्म जिनका आधार हैं सुन्दर विचार। जितने विचार महान होंगे, जीवन भी उतना ही महान बनेगा। विचारों को महान बनाने और उन्हें महान कर्मों में परिणित करने के लिए चाहिएँ अन्तर्मुखता, दृढ़ता, एकाग्रता, अभ्यास, लगन आदि सद्गुण। कई बार गरीबी में पले पर उच्च मनोबल के धनी बच्चे, छोटे-छोटे काम करके, संघर्ष करके, मेहनत के बलबूते पर समाज में मिसाल कायम कर लेते हैं। दूसरी ओर, बाल्यकाल से स्मार्ट

फोन के साथ-साथ तमाम सुख-सुविधाओं में पले बच्चे, मनोबल और उचित मार्गदर्शन की कमी के कारण व्यसनों और विकारों के मायाजाल में फँसकर कब अपराध जगत का हिस्सा बन जाते हैं, स्वयं भी समझ नहीं पाते हैं। अत: हम सदा याद रखें, भोग आत्मा का शोषण करता है और त्याग पोषण करता है। साधना हमेशा साधनों से बड़ी है। स्मार्ट फोन भले रखें पर जीवन को त्याग, दया, सहयोग, सद्भावना, क्षमा जैसे गुणों से स्मार्ट बनाना न भूलें।

श्रेष्ठता है मनोबल की

रचना कितनी भी अच्छी क्यों न हो, कितनी भी प्रसिद्ध क्यों न हो जाये, फिर भी रचयिता का स्थान सदैव ऊँचा रहता है। आज मोबाइल भले ही महत्त्व की चीज बन गया है परन्तु आखिर भी इसका रचयिता तो मानव का मनोबल ही है। अत: निर्विवाद रूप से श्रेष्ठता तो मनोबल की ही है। घर से बाहर जाते समय यदि भूलवश व्यक्ति का मोबाइल छूट जाता है या उसकी बैटरी डिस्चार्ज हो जाती है, तो उसके बिना वह स्वयं को पंगु-सा अनुभव करता है जबकि मनोबल ऐसी अनमोल धरोहर है जो सदा व्यक्ति के साथ रहती ही है, पीछे छूट ही नहीं सकती और परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम बनाती है। ऊँचे मनोबल वाला व्यक्ति कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी धीरज से काम लेते हुये आंतरिक खुशी को बरकरार रख सकता है। अंत में यही कहना चाहूँगी,

मनोबल के सहारे चढ़ सफलता की सीढ़ी।
फूल बरसायेंगी बहारें, युग-युग याद करेंगी पीढ़ी। ❖

'विजयी भव' के वरदान का कमाल

ब्रह्माकुमार परमिंदर, जालन्धर (पंजाब)

मैं पिछले ढाई साल से ईश्वरीय ज्ञान में चल रहा हूँ। आज से 17 साल पहले कुछ परिस्थितियों के कारण मैं डिप्रेशन का शिकार हो गया था। इलाज के लिए 15 साल तक इधर-उधर भटकता रहा लेकिन कुछ भी फायदा नहीं हुआ। ढाई साल पहले, ज्यादा बीमार होने के कारण लुधियाना के सी.एम.सी.अस्पताल में दाखिल होने के लिए गया। वहाँ डॉक्टर के न मिलने के कारण लौकिक बहन के घर चला गया। बहन ने कहा कि पास ही ब्रह्माकुमारियों का आश्रम है, वहाँ बहुत-से लोग रोगमुक्त हुए हैं, आओ, वहाँ चलते हैं।

मैं पिछले 45 सालों से माँसाहार कर रहा था और 30 सालों से शराब पी रहा था। डॉक्टर कहते थे कि शराब आपके लिए बहुत हानिकारक है। आप जो दवाई खा रहे हो, इसमें शराब का सेवन ऐसे ही है जैसे कि आग के ऊपर पेट्रोल डालना। तब भी मैंने डॉक्टर का कहना नहीं माना। रिश्तेदार व घरवाले सभी का कहना था कि शराब छोड़ दो लेकिन मुझ पर कोई असर नहीं हुआ। जब हम सेवाकेन्द्र पर गये तो वहाँ पाया कि वातावरण बहुत शांत है। मन को बहुत सुकून मिला और वहाँ मेरा 7 दिन का कोर्स शुरू हो गया। तीसरे तीन मधुबन से दो दीदियाँ वहाँ आयी। उन्होंने मेरे से पूछा कि भाई जी, कब से ज्ञान में चल रहे हो? मैंने कहा, दीदी, अभी तीन दिन ही हुए हैं। दीदी ने मुझे टोली (प्रसाद) दी और 'विजयी भव' का वरदान दिया। मैंने टोली खाई और सेवाकेन्द्र से घर की ओर चल पड़ा।

रास्ते में मुझे एक माँसाहार की दुकान दिखाई दी। मैं वहाँ रुक गया और उसे खाने के लिए उत्सुक हुआ, तभी मन में खयाल आया कि अभी-अभी 'विजयी भव' का वरदान मिला है। अगर मैंने माँसाहार किया तो वरदान तो यहीं पर समाप्त हो जायेगा। वहाँ 20 सेकेण्ड में मैंने फैसला किया कि अब कभी शराब व मांस का सेवन नहीं करूँगा। इसके ठीक तीन महीने बाद मेरा डिप्रेशन ठीक हो गया। मुझे बाबा के प्यार का इतना नशा हो गया कि मैं सुबह-शाम सेवाकेन्द्र में जाकर सेवा करने लगा। तबीयत बिल्कुल ठीक हो गयी, व्यापार चारगुणा बढ़ गया। घर में भी सुख-शान्ति और खुशी का माहौल बन गया। अब दिल यही गाता रहता है, मेरे बाबा, आपने कमाल कर दिया! ❖

सतोप्रधान तकनीकी

ब्रह्माकुमारी ऋतु, छतरपुर (म.प्र.)

ज्ञान की वृद्धि से जीवन को सुखदायी बनाने के लिए मानव निरंतर प्रयास करता है। नयी-नयी चीजें बनाने की उसकी योग्यता ने जीवन का ढंग ही बदल दिया है। प्राकृतिक स्रोतों का प्रयोग कर उसने सामान्य जन को भी सुविधायें दी हैं, मेहनत से मुक्त कर कार्यों को सरल बना दिया है। इससे जीवन का स्तर तो ऊंचा उठा है किंतु मानवीय विचारों, भावनाओं, बोल, कर्म-व्यवहार के स्तर में गिरावट आयी है। मानव और अधिक भौतिकवादी हो गया है। वह हर बात में आर्थिक लाभ देखने लगा है। इसलिए कहा गया है कि विज्ञान ने हमें मछली जैसा सागर में तैरना सिखाया है, पक्षी जैसा आसमान में उड़ना सिखाया है किंतु जमीन पर कैसे चलना है, यह नहीं सिखाया अर्थात् धरती पर जीवन जीने के लिए जिन जीवन-मूल्यों – प्रेम, दया, सम्मान, क्षमा आदि की आवश्यकता है वे आज हमसे कहीं पीछे छूट गए हैं।

चुरा लिया एकांत और शान्ति के आनन्द को

आत्मिक गुणों से रहित देहअभिमान वाली बुद्धि से जो भी आविष्कार हुए हैं उनमें सुख के साथ दुख भी समाया है। हथियार भी घातक बनते गये जिनसे रोज हिंसक घटनायें हो रही हैं। ऑटोमोबाइल ने तेज गति से यात्रा के साधन दिये। स्वतंत्रता, सुविधा के साथ कार आदि से उच्च सामाजिक स्तर होने का अहसास भी मिला किंतु इन वाहनों के कारण सड़कों पर स्थान कम होता गया। आज अधिकांश शहरों में ट्रैफिक जाम, जीवन का एक अनचाहा हिस्सा बन गया है जिससे समय और ऊर्जा नष्ट होने के साथ-साथ अवसरों के छूटने से लोगों में चिड़चिड़ापन आ रहा है। इससे पर्यावरण तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के साथ धुएँ, कोहरे के कारण लंबा इंतजार तथा दुर्घटनाओं के खतरे बढ़ रहे हैं। इसी प्रकार संचार तकनीकी में क्रांति ने मानव को टी.वी., इंटरनेट, सैल फोन आदि उपहार दिये। इनसे मनोरंजन, जानकारी प्राप्त करना तथा लोगों से संपर्क रखना आसान हुआ परंतु टी.वी. पर प्रस्तुत अश्लील और हिंसक कार्यक्रमों द्वारा लोगों की नैतिकता भ्रष्ट हुई तथा अपराधों में बढ़ोतरी हुई है। सैल फोन ने लोगों के एकांत के आनंद तथा शांति को चुरा लिया है। हर स्थान पर, हर समय लोगों की बातचीत – पढ़ाई, प्रार्थना, मीटिंग आदि में बाधा डाल रही है। दुधारी तलवार की तरह, तकनीकी के थोड़े फायदे के साथ नुकसान की सूची लंबी है। स्प्रे, फ्रिज, पेन्ट आदि से ओजोन परत को नष्ट करने वाली सी.एफ.सी. गैस निकलती है। सी.एफ.एल. लाइट से बिजली की बचत तो होती है परंतु इनमें नुकसानकारक जहरीला पारा होता है। प्लास्टिक पॉलीथीन का नष्ट न होने वाला कचड़ा भी आज एक समस्या बना हुआ है।

पवित्र मन से निर्मित होती है सुखदाई तकनीकी

मानव की बुद्धि और इरादे लोभ, अहंकार जैसे विकारों के रंग में रंगे हैं इसलिए वह संपूर्ण तस्वीर न देख छोटे, संकीर्ण लक्ष्यों के पीछे जाता है और इस प्रक्रिया में वह अपना ही अहित कर लेता है। तकनीकी तब सुखद परिणाम देती है जब यह विकारों से अनछुई हो। पवित्र मन में ही ऐसी तकनीकी निर्मित हो सकती है। जब आत्मा ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग से अपने ऊपर चढ़ी विकारों की गंदी पर्तों को हटा देती है, तब वह सत्य को वास्तविक रूप में देखने लगती है और प्रकृति व पदार्थों के सब रहस्यों को समझ इन पर नियंत्रण प्राप्त कर, कल्याणकारी रूप में इनका प्रयोग करती है। इस प्रकार की तकनीकी सतयुग में होती है।

भौतिकता के साथ आध्यात्मिक मूल्य

परमात्मा पिता विज्ञान और तकनीकी के क्षेत्र में अपने बच्चों द्वारा की जाने वाली नई-नई शोध और मेहनत को जानते हैं, देखते हैं, उनकी प्रशंसा भी करते हैं और बधाई

भी देते हैं। साथ-साथ यह भी कहते हैं कि इन साधनों की खोज, निर्माण और प्रयोग – तीनों स्तरों पर जब मेरी याद, मेरा साथ और मेरे द्वारा दिया ज्ञान लेकर चलोगे तो ये इतने अधिक रिफाइन्ड (उत्कृष्ट) हो जाएंगे जो इनके हानिकारक पहलू पूरी तरह समाप्त हो जाएंगे। इसी का नाम है विज्ञान और तकनीकी के साथ अध्यात्म का मेल। यह मेल अब होने जा रहा है। परमात्मा पिता द्वारा राजयोग सीखने वाले वैज्ञानिकों, उपकरण-निर्माताओं तथा उपभोक्ताओं की एक लम्बी सूची है जो इस क्षेत्र में कार्य करते-करते धीरे-धीरे परफेक्शन (सम्पूर्णता) की ओर बढ़ रहे हैं। अब वो दिन दूर नहीं जब द्रुतगति विमान होगा पर दुर्घटना नहीं और उच्च मानसिक भूमिका के आधार पर सूचनाओं का आदान-प्रदान बिना गतिरोध के होगा। ये सब चिन्ह हैं सतयुगी सृष्टि के जहाँ भौतिकता के सर्व सुख भी होंगे और आध्यात्मिक मूल्य भी। ऐसी दैवी दुनिया में चलने के लिए आप सभी का भी आह्वान है। ❖

छूट गए बुरे कर्म

ब्रह्माकुमार आनन्द कुमार, बुड़ैल जेल, चण्डीगढ़

मेरी आयु 40 वर्ष है, मैं हाईकोर्ट जस्टिस एम.एस.चौहान जी के साथ बतौर P.S.O.(Personal Security Officer) तैनात था। परिस्थितिवश मेरा और मेरी पत्नी का झगड़ा शुरू हुआ। मैं भगवान को मानने वाला हूँ। मुझे शुरू से ही अपने पिता भगवान की खोज थी। कभी भी कोई नशा आदि नहीं किया।

पत्नी सरकारी नौकरी करती थी। एक दिन जज साहब ने किसी काम के लिए मुझे सेक्टर-16 हस्पताल में भेजा, वहाँ मेरी पत्नी मुझे मिल गयी और हमारा आपस में झगड़ा हो गया। उसने मेरी पिस्टल निकाल कर मुझ पर गोली चला दी। एक गोली मुझे लगी, दूसरी छीना-झपटी में उसे लग गयी, उसने मौके पर ही प्राण त्याग दिये। मैं बेहोश हो गया, जब आँख खुली तो सामने मेरी पत्नी का मृत शरीर पड़ा था।

पुलिस ने हत्या का मामला बना मुझे बुड़ैल जेल भेज दिया। यहाँ मैं 31 जुलाई, 2014 से विचाराधीन बन्दी हूँ। जब जेल में आया तो बहुत परेशान था और हैरान था कि यह सब कैसे हो गया। हमारे दो जुड़वाँ बच्चे हैं, मैं उनसे भी बहुत प्यार करता हूँ, वे मेरे बिना एक दिन भी नहीं रहे। आज उन्हें माँ-बाप के बिना रहना पड़ रहा है। जेल में 2-3 दिन तो मुझे नींद ही नहीं आई, ऐसा लग रहा था कि मैं पागल हो जाऊँगा, सबको मार दूँगा, बुरे-बुरे ख्याल मन में आ रहे थे।

जेल में एक भाई ने मेरी मदद की, वह मुझे ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा सिखाए जाने वाले राजयोग की क्लास में ले गया जो कि जेल की लाइब्रेरी में चलती है। क्लास में मुझे बताया गया कि यहाँ राजयोग द्वारा अपनी इन्द्रियों पर राज्य करना सिखाया जाता है। फिर मुझे निमित्त ब्रह्माकुमार भाई ने आत्मा का ज्ञान दिया, मुझसे मेरा परिचय करवाया और सात दिन का कोर्स भी करवाया।

कोर्स पूरा होते ही मुझमें बदलाव आने लगा और मुझे अनुभव हो गया कि स्वयं परमपिता परमात्मा यह ज्ञान सुना रहे हैं। जिन्हें मैं वर्षों से ढूँढ़ रहा था वे यहाँ आकर मिल गये। जेल मुझे स्वर्ग नजर आने लगी, इसका नाम लाइट हाउस रखा है। तब से लेकर बुरे कर्म, क्रोध करना, झूठ बोलना, गाली देना आदि सब छोड़ दिये हैं। तीन साल से कोई भी बुरा काम नहीं किया है और बाबा की मुरली एक दिन भी मिस नहीं की है।

अब लगता है कि मुझे सब कुछ मिल गया है, और कुछ नहीं चाहिये। बस शिवबाबा और मैं, तीसरा कोई नहीं। मैं शिवबाबा का पक्का बच्चा बन गया हूँ। मैं पुरुषार्थ कर पवित्र बन रहा हूँ। यह ईश्वरीय ज्ञान जीवन परिवर्तन करने वाला है इसलिए सभी भाई-बहनों से अनुरोध करता हूँ कि प्यारे शिवबाबा का दिया हुआ यह रूहानी ज्ञान अवश्य सीखें। ❖

दुखों की फीलिंग समाप्त करती है परमात्म छत्रछाया

ब्रह्माकुमार सत्यम, रादौर

आज की दुनिया में हर एक आत्मा दुखी है। किसी को तन का, किसी को मन का, किसी को धन का तो किसी को जन का दुख है। आज सम्पूर्ण विश्व में एक भी आत्मा ऐसी नहीं है जो सौ प्रतिशत दृढ़ता से कहे कि मैं पूर्णतया सुखी हूँ, मुझे कभी भी, किसी भी प्रकार का दुख नहीं होता। सचमुच, यह दुनिया पूर्णतः दुखधाम, नरक बन चुकी है तभी तो हर एक आत्मा परमपिता परमात्मा को दिल से पुकारती है 'हे दुखहर्ता, सुखकर्ता आओ और हमें इस दुनिया से कहीं दूर सुख की दुनिया में ले चलो।' पर एक बार सच्चे दिल से स्वयं से पूछिए, क्या हम सचमुच इस दुनिया को छोड़ने के लिए तैयार हैं? अगर परमपिता परमात्मा हमें लेने आ जाएँ तो क्या एक सेकण्ड में सब कुछ छोड़ कर खुशी से उनके साथ चलेंगे?

हम सभी जानते हैं, हम रहना भी यहीं चाहते हैं और दुखों से भी छूटना चाहते हैं। वास्तव में हम सभी दुखधाम को सुखधाम में बदलना चाहते हैं। दुख और सुख हमारे अपने ही कर्मों के परिणाम हैं और कर्मों के परिणाम से कोई भी छूट नहीं सकता। तो बिना कर्मों का फल भोगे हम सुखधाम (स्वर्ग) में कैसे जा सकते हैं?

स्वयं परमपिता परमात्मा भी हमें हमारे कर्मों के फल से मुक्त नहीं कर सकते क्योंकि वे सिर्फ हमारे पिता नहीं, सम्पूर्ण विश्व की आत्माओं के पिता हैं। अगर वे हमें क्षमा करेंगे तो उन सभी आत्माओं के साथ पक्षपात हो जाएगा जिनके प्रति हम कभी न कभी दुख देने के निमित्त बने थे। जैसे किसी व्यक्ति का ऑपरेशन होना होता है तो डॉक्टर ऑपरेशन से पहले उसे बेहोश करता है। उसके पश्चात् ही चीर-फाड करता है तो मरीज को दर्द की महसूसता नहीं होती। ठीक उसी प्रकार, रूहानी सर्जन (परमपिता परमात्मा) भी हमें कर्मों के फल से नहीं छुड़ा सकता पर उसकी याद रूपी इन्जेक्शन हमारे समस्त दुखों की फीलिंग को समाप्त अवश्य कर सकता है। अगर हमारे सिर पर परमपिता परमात्मा की छत्रछाया है तो हम बड़ी से बड़ी परिस्थिति और संकटों का बिना चिल्लाए, घबराए सामना कर सकते हैं। अगर उसकी याद रूपी इन्जेक्शन नहीं लिया तो छोटे से छोटा विघ्न भी हमें दुख और घबराहट देगा।

वास्तविकता तो यह है कि परमात्मा हम सबके परमपिता हैं, वे अपने बच्चों को दुख में नहीं देख सकते, तभी तो जब हम उन्हें पुकारते हैं तो वे दुखों से छुड़ाने के लिए दौड़े-दौड़े कलियुग के अन्त में धरा पर आते हैं। परन्तु हम शायद उस जिद्दी बच्चे की तरह हैं जो ऑपरेशन टेबल पर तो है पर बेहोशी का इन्जेक्शन लेने को तैयार नहीं और इसी उम्मीद में है कि डॉक्टर फिर भी उसे दर्द नहीं होने देगा। बस हमें जिद्द छोड़ परमात्मा की याद का इन्जेक्शन लेना है। फिर चाहे कितने भी बड़े दुख, विघ्न, परिस्थितियाँ आएँ, हमें दुख की जरा भी महूससता नहीं दे पायेंगे। आएंगे और चले जाएंगे। इस सच्चाई से हम मुँह नहीं मोड़ सकते कि हम सभी हिसाब-किताब चुक्ता किये बिना अपने घर मुक्तिधाम नहीं लौट सकते, न स्वर्ग में जा सकते हैं। फिर क्यों न परमपिता परमात्मा को साथी बनाकर सभी हिसाब-किसाब खुशी-खुशी चुक्ता कर उनके साथ घर जाएँ और फिर स्वर्ग में आकर राज्य करें।

हमें इतना ही तो करना है कि परमपिता परमात्मा की याद रूपी छतरी सदा अपने साथ रखनी है ताकि दुखों रूपी बरसात हमें भिगो न पाये। भगवान छतरी बनने के लिए तैयार हैं, उसे साथ रखना या न रखना, हमारी मर्जी है। बस, एक कदम बढ़ाना है ईश्वर की ओर। ❖

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रिन्टिंग प्रेस, शान्तिवन -307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया। संयुक्त सम्पादिका - ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
▸▸ फोटो, लेख, कविता या अन्य प्रकाशन सामग्री के लिये : **E-mail : gyanamritpatrika@bkivv.org**
Website: gyanamrit.bkinfo.in **Ph. No. : (02974) - 228125**

1

2

3

4

5

6

1. जयपुर (राजापार्क)- राजस्थान की मुख्यमंत्री बहन वसुंधरा राजे सिंधिया को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.पूनम बहन तथा ब्र.कु.सन्नु बहन। **2.राजकोट-** गुजरात के मुख्यमंत्री विजयभाई रूपाणी का बुक्स के बुके से अभिवादन करते हुए ब्र.कु.अंजू बहन, ब्र.कु.नलिनी बहन, ब्र.कु.दक्षा बहन, ब्र.कु.लक्ष्मी बहन तथा अन्य। **3. वडोदरा (अटलादरा)-** 'सत्यमेव जयते और श्रीमद्भगवद्गीता' विषयक सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भ्राता ब्र.कु.बृजमोहन जी, ब्र.कु.सरला बहन, राजमाता सुभांगिनी देवी जी राजे, ब्र.कु.ललित भाई, ब्र.कु.अमर बहन, ब्र.कु.शारदा बहन, ब्र.कु.नेहा बहन, ब्र.कु.अरुणा बहन तथा अन्य। **4.कोल्हापुर (नेसरी)-** शिवसेना प्रमुख भ्राता उद्धव ठाकरे को ईश्वरीय सौगात देते हुए ब्र.कु.सुरभि बहन। **5.कुरुक्षेत्र-** आदरणीय भ्राता लक्ष्मण जी की प्रथम पुण्यतिथि पर उनके स्मृति-ग्रन्थ का विमोचन करते हुए स्वामी शाश्वतानंद गिरि, ब्र.कु.आत्मप्रकाश भाई, ब्र.कु.शुक्ला बहन, प्रो.सुरेन्द्र मोहन मिश्रा, विधायक भ्राता सुभाष सुधा, ब्र.कु.संतोष भाई, पूर्व विधायक भ्राता रमेश गुप्ता, ब्र.कु.मेहरचंद तथा अन्य। **6. इन्दौर-** 'सम्पादक सम्मेलन' में चर्चा करते हुए मीडिया विश्लेषक भ्राता एन.के.सिंह, इंडिया टी.वी.के पूर्व प्रधान संपादक भ्राता अजीत अंजुम, पत्रकारिता एवं जन संचार विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ.मानसिंह परमार, नेशनल बुक ट्रस्ट के अध्यक्ष बलदेव भाई शर्मा, ब्र.कु.करुणा भाई, ब्र.कु.हेमलता बहन तथा प्रो.कमल दीक्षित।

RNI No.10563/1965, Postal Regd. No.RJ/SRO/9559/2018-2020 Posting at Shantivan-307510 (Abu Road)
Licensed to post without prepayment No. RJ/WR/WPP/002/2018-2020. Published on 20th of each Month & Posted on 26th to 1st of each month. Price 1 copy Rs. 8.50, Issue : February, 2018.

मैसूर-
सन्त सम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी जानकी जी, रामकृष्ण आश्रम के अध्यक्ष श्री आत्मजानन्द, अरमेरी कालन्चेरी श्री शान्त मल्लिकार्जुन स्वामी जी तथा अन्य सन्तगण।

शान्तिवन (आबू रोड)-
'देश की प्रगति का आधार – सशक्त किसान' विषयक महासम्मेलन का उद्‌घाटन करते हुए केन्द्रीय कृषि तथा किसान कल्याण मंत्री भ्राता राधामोहन सिंह, राजयोगिनी दादी जानकी जी, ब्र.कु.सरला बहन, ब्र.कु.मुन्नी बहन तथा अन्य।

दिल्ली-
भारत के राष्ट्रपति महामहिम भ्राता रामनाथ कोविंद को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद ब्र.कु.मृत्युंजय भाई, उत्तर प्रदेश के पूर्व शिक्षामंत्री भ्राता अमरजीत सिंह जनसेवक तथा ब्र.कु.शिविका बहन उनके साथ।

शान्तिवन (आबू रोड)-
आई.टी.व्यवसायियों के लिए आयोजित सेमिनार का उद्घाटन करते हुए एच.एस.ई.इंजीनियरिंग रिलायंस प्रोजेक्ट प्रबन्धन समूह के उपाध्यक्ष डॉ.अतुल श्रीवास्तव, ब्र.कु.निर्वैर भाई, डॉ.निर्मला बहन, क्यूए इन्फो लिमिटेड के नोएडा के सी.ई.ओ.भ्राता मुकेश शर्मा, क्यूए कम्पनी के संस्थापक भ्राता राजेश शर्मा तथा अन्य।